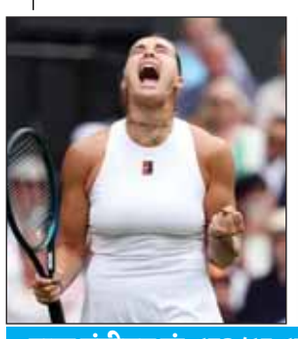

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 | विंबलडन क्वार्टरफाइनल में पहुंचीं नंबर-1 एरिना सबालेंका | सम्पादकीय | पाकिस्तान के साथ-साथ चीन के मोर्चे... | टर्किश कंपनी भारत में एयरपोर्ट पर सर्विस ... | 5

वर्ष 19 ● अंक 173 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online | ग्वालियर, मंगलवार 08 जुलाई 2025 | email - hindustanexpressbhopal@gmail.com | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

उपराष्ट्रपति ने कहा-जस्टिस वर्मा केस में तुरंत एफआईआर की जरूरत

आर.एन.एस

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को जस्टिस वर्मा के घर में मिले अधजले नोटों के मामले में तुरंत एफआईआर की बात कही। उन्होंने कहा- यह न केवल चिंताजनक है, बल्कि यह हमारी न्यायपालिका की नींव को हिला देने वाला है।

इस मामले की जड़ तक जाने की जरूरत है। कैश कहां से आया, ये जानना बहुत जरूरी है। केंद्र स्तर पर सरकार मजबूर है, क्योंकि 90 के दशक की शुरुआत में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के आदेश के कारण जस्टिस पर एफआईआर दर्ज नहीं की जा सकती है।

धनखड़ ने नेशनल एडवांस्ड लीगल स्टडीज यूनिवर्सिटी के सेमिनार में ये बातें कहीं। दरअसल,

दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित घर में 14 मार्च की रात आग लगी थी। उनके घर के स्टोर रूम में 500-500 रुपए के जले नोटों के बंडलों से भरे बोरे मिले थे। इसके बाद से ये सवाल खड़ा हुआ कि इतना कैश कहां से आया। जस्टिस यशवंत वर्मा के घर से मिले कैश केस की जांच कर रहे पैनल की रिपोर्ट गुरुवार को सामने आई है। 64 पेज की रिपोर्ट में कहा गया है कि हाईकोर्ट जज यशवंत वर्मा और उनके परिवार के सदस्यों का स्टोर रूम पर सीक्रेट या एक्टिव कंट्रोल था। यहीं 14 मार्च की रात आग लगने के बाद बड़ी संख्या में अधजले नोट मिले थे। रिपोर्ट में जस्टिस वर्मा का पक्ष भी है, जिसमें उन्होंने कहा है कि जिस स्टोर रूम में नोटों की गड्डियां मिलने की बात की जा रही है, वहां उन्होंने या उनके परिवार ने कभी कोई पैसा नहीं रखा। वो एक ऐसी खुली जगह है, जहां हर किसी का आना-जाना होता है। उन्हें इस मामले में फंसाया जा रहा है। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डीके उपाध्याय ने इंटरनल इन्क्वायरी के बाद सुप्रीम कोर्ट को 21 मार्च को रिपोर्ट सौंपी थी। सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस वर्मा को ज्यूडिशियल काम देने से मना कर दिया है। अब जस्टिस वर्मा के 6 महीने की कॉल डिटेल्स की जांच की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा-लुधियाना इंटरैक्टिव सेशन में मिले 15,606 करोड़ के निवेश प्रस्ताव

20 हजार से अधिक रोजगार का होगा सृजन, लुधियाना और पंजाब के निवेशकों को मध्यप्रदेश में किया आमंत्रित , मध्यप्रदेश में निवेश करें और विकसित भारत के निर्माण में बने भागीदार , पंजाब और मध्यप्रदेश मिलकर करेंगे देश का विकास , श्रमिकों के हित में मध्यप्रदेश सरकार ने बड़े स्तर पर लंबित सेटलमेंट किये क्लियर , निवेशकों को राज्य की औद्योगिक नीतियों से कराया अवगत, इंटरैक्टिव सेशन और संवाद-सत्र में 400 से अधिक प्रतिभागी हुए शामिल, वन-टू-वन चर्चा में 15 से अधिक उद्योगपतियों से किया संवाद, निवेशकों ने म.प्र. के विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई निवेश के प्रति रूचि

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश का आर्थिक तंत्र मजबूत हुआ है। देश में औद्योगीकरण बढ़ा है, अब हम विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं। लुधियाना भारत का मैन्चेस्टर है। यहां के उद्योगपतियों ने बड़ी मेहनत से अपनी पहचान बनाई है। लुधियाना में निर्मित ए-वन और हीरो साइकिल्स देश-दुनिया में मशहूर हैं। पंजाब के निवेशक देश की आर्थिक समृद्धि में योगदान देने वाले प्रमुख ध्वजवाहक हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज लुधियाना में हुये इंटरैक्टिव सेशन, वन-टू-वन चर्चा और संवाद सत्रों में यहां के उद्योगपतियों से 15 हजार 606 करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुये हैं, जिससे 20 हजार से अधिक रोजगार का सृजन होगा। हमने लुधियाना और पंजाब के उद्योपतियोंत को मध्यप्रदेश में उद्योग लगाने के लिये आमंत्रित किया। साथ ही उन्हें मध्यप्रदेश में उपलब्ध संसाधनों के साथ राज्य की औद्योगिक नीतियों से भी अवगत कराया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को पंजाब की उद्योग नगरी लुधियाना में मध्यप्रदेश में निहित निवेश की संभावनाओं के संबंध में निवेशकों को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश देश का एकमात्र प्रदेश है, जहां पन्ना जिले में हीरा तो शहडोल में आयरन डिपाजिस्ट्स है। बीते दिनों सिंगरौली जिले में सोने की खदानें भी मिली हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी निवेशकों को मध्यप्रदेश की रत्नगर्भा भूमि में निवेश करने के लिए आत्मीयता से आमंत्रित करते हुए कहा कि यहां व्यापार की असीम संभावनाएं हैं। आइये और मध्यप्रदेश में अपना दूसरा घर बनाईये। उन्होंने कहा कि निवेशक मध्यप्रदेश में जितने चाहें, उतने उद्योग-धंधे लगाएं, सरकार पलक-पावड़े बिछाकर आपका स्वागत करेगी, आपकी हर संभव मदद करेगी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में उद्योग-धंधे लगाने के लिए जरूरत के मुताबिक भूमि, बिजली, पानी, कुशल कार्यशक्ति सब उपलब्ध हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश और पंजाब दोनों भाइयों की तरह हैं। अनाज के उत्पादन में पंजाब बड़ा और मध्यप्रदेश छोटा भाई है। ?अब दोनों भाई मिलकर देश और मध्यप्रदेश का विकास करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति पथ पर है। पंजाब वीरों की धरती है, इसकी अलग ही पहचान है। यह गुरु परंपरा की अद्भुत धरती है। मध्यप्रदेश के इंदौर की पहचान स्वच्छता में है, तो लुधियाना की पहचान उद्योगों से है। हम उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश में उद्योग लगाने के लिए आमंत्रित करने आए हैं। आप खुले दिल से और बिना किसी हिचक के निवेश करें, सरकार जितनी हो सकेगी, आपकी उतनी मदद करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत बदलते दौर में सिरमौर बन रहा है। उद्योगों से कई परिवारों का उदर-पोषण होता है और गरीबों के जीवन में आमदनी का उजाला आता है। यह एक पवित्र कार्य है। उद्योगपति अपने परिवार का पोषण करते हुए दूसरों का भी घर रौशन करते हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब अमर शहीद भगत सिंह की धरती है, जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान देकर देश की आजादी में अहम भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप लोग यहां भी काम करते रहें और अपने कारोबार का विस्तार करते हुए एक-दो फैक्ट्री मध्यप्रदेश में भी लगाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) में मध्यप्रदेश सरकार ने अपनी उद्योग अनुकूल नीतियों को दुनिया के सामने रखा। हमने उद्योगपतियों को कई सौगातें दी हैं। टेक्सटाईल्स सेक्टर के इंडस्ट्रियल वर्कर्स की सैलरी में मध्यप्रदेश सरकार 5 हजार रुपए की अतिरिक्त मदद देगी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में स्कूली बच्चों को साइकिलें बांटी जा रही हैं। साइकिलें मुख्यत- पंजाब में ही बनती हैं। यही साइकल मध्यप्रदेश में भी बन सकती हैं। उद्योगपति मध्यप्रदेश में साइकल बनाने की फैक्ट्री लगाएं। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया में सोने की चिड़िया की पहचान रखता था। वर्ष 1947 में देश **शेष पृष्ठ 5 पर...**

'शब्द सुरों की वीणा' पुस्तक का केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने किया विमोचन

लेखक अशोक कुमट की सराहना करते हुए स्व. डॉ. वीना नागपाल के साहित्यिक योगदान को दी श्रद्धांजलि

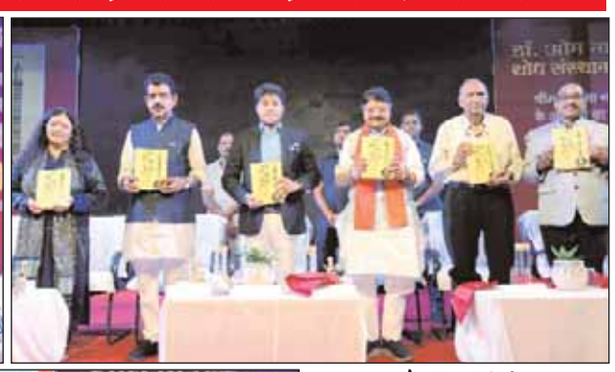

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

इंदौर। केंद्रीय सूचना एवं उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इंदौर के रवीन्द्र नाट्यगृह में वरिष्ठ साहित्यकार स्व. डॉ. वीना नागपाल के संस्मरणों पर आधारित पुस्तक 'शब्द सुरों की वीणा' का विमोचन किया। इस पुस्तक को प्रख्यात पत्रकार व लेखक अशोक कुमट द्वारा लिखा गया है। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन एवं सांसद शंकर लालवानी सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मूल्य और सिद्धांतों के हम सब प्रहरी बनें: सिंधिया

कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हमें मूल्यों और सिद्धांतों की याद दिलाने वाले प्रहरी बनना होगा, एक कोतवाल की तरह जो समाज की आत्मा की रक्षा करता है।

डॉ. वीना नागपाल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्होंने कहा कि वह भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, परंतु उनकी उपस्थिति, उनकी लेखनी के रूप में आज भी जीवित है। अंत में उन्होंने लेखक अशोक कुमट को इस पुस्तक के सफल प्रकाशन और प्रस्तुति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

तेलंगाना फैक्ट्री धमाका: मरने वालों का आंकड़ा 42 हुआ, 8 लापता

हैदराबाद। तेलंगाना की फॉर्मा फैक्ट्री धमाके में मरने वालों का आंकड़ा 42 हो गया है। रविवार को एक व्यक्ति की अस्पताल में मौत हो गई, जबकि एक शव की पहचान डीएनए जांच से हुई है। 8 लोगों लापता हैं। हादसे से 6 दिन बाद भी सर्च ऑपरेशन जारी है। अधिकारियों ने रविवार को बताया कि शनिवार और रविवार को घटनास्थल से कुछ हड्डियां और शरीर के जले अंग मिले हैं। इनका DNA टेस्ट चल रहा है। यदि इनका मिलान होता है तो लापता लोगों की संख्या घट सकती है। हादसा 30 जून को पाशमिलारम इंडस्ट्रियल एरिया स्थित सिगाची इंडस्ट्रीज में सुबह 8.15 बजे से 9.30 बजे के बीच हुआ था।

पुष्पा स्टाइल में बही लकड़ियों की सीआईडी जांच के निर्देश, पंडोह डैम केस में सच्चाई सामने आना जरूरी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में 24 जून को कुल्लू में बादल फटने के बाद पुष्पा स्टाइल में बाढ़ में बहकर पंडोह डैम पहुंची सैकड़ों टन लकड़ियों की सीआईडी जांच होगी। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने आपदा प्रबंधन को लेकर चल रही मीटिंग में इसकी जांच के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री सुक्खू ने कहा, पंडोह डैम में लकड़ियां कहां से बहकर आई, इसका पता लगाया जाएगा। वन विभाग ने अपने स्तर पर जांच की है। अब सीआईडी जांच करवाकर सच्चाई को सामने लाया जाएगा। बता दें कि कुल्लू में बीते 24 जून को 4 जगह बादल फटा। इसके बाद हजारों टन लकड़ियां बहकर पंडोह डैम पहुंची थी। सोशल मीडिया पर इसे लेकर जनता ने वन विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाए। ठियोग से कांग्रेस विधायक कुलदीप राठौर ने भी वन विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए मुख्यमंत्री से इसकी उचित जांच मांगी और कहा कि जंगलों का विनाश तबाही का कारण बन रहा है।

पूर्व जिपं. अध्यक्ष गोटू की भोज राजनीति के पीछे छुपे अंर्तनिहित संदेश

-क्या अब अपने बड़े भाई देवेन्द्र जैन से दूरी बनाकर करेंगे वह राजनीति

-अशोक कोचेटा-

अपने बड़े भाई और वरिष्ठ भाजपा नेता वर्तमान विधायक देवेन्द्र जैन की अंगुली पकड़ कर और धनबल के सहारे भाजपा राजनीति में सीधे जिला पंचायत अध्यक्ष पद की कुर्सी हांसिल करने वाले जितेन्द्र जैन गोटू हमेशा चर्चाओं के केन्द्र बिन्दु में रहते हैं। उनकी राजनैतिक महत्वकांक्षा अद्य्य है। विधायक पद पर उनकी हमेशा नजर रही है और इसके लिए उन्होंने बहुत भागदौड़ तथा मेहनत की है। दलों से भी परहेज नहीं किया। बड़े से बड़े नेता पर निशाना लगाने में भी गुरेज नहीं किया। लेकिन इसके बाद भी वह सफलता नहीं प्राप्त कर पाए हैं। शायद इसी कारण वह राजनीति में अपनी एक नई लाईन खींचना चाहते हैं। कल जन्म दिन के बहाने मीडिया को दिया गया भोज उनकी नई राजनैतिक दिशा की ओर साफ इशारा कर रहा हैं। संदेश स्पष्ट है कि वह अब अपने बड़े भाई देवेन्द्र जैन की राजनैतिक छाया से मुक्त होकर राजनीति करेंगे। भोज में विधायक देवेन्द्र जैन और उनके पुत्र सक्षम जैन की अनुपस्थिति भी इसी तथ्य की ओर साफ इशारा करती है। वैसे भी विधायक जैन का झुकाब अपने भाई के स्थान पर अपने पुत्र भाजपा जिला कोषाध्यक्ष सक्षम जैन की ओर हैं और वह अपने पुत्र को बढ़ावा देने में जुटे हुए हैं। विधायक जी का सारा काम काज पर्दे के पीछे से उनके पुत्र ही संभाल रहे हैं। पत्ते बाले जैन परिवार में देवेन्द्र जैन ही छात्र जीवन से ही जनसंघ और भाजपा की राजनीति करते रहे हैं। वह संघ के

स्वयंसेवक रहे हैं। राजमाता विजयाराजे सिंधिया के वह काफी नजदीकी रहे हैं और यशोधरा राजे सिंधिया को सक्रिय राजनीति में लाने के लिए उन्होंने 1989 में एक मुहिम भी चलाई थी। एक समय यशोधरा राजे के कट्टर समर्थक रहे देवेन्द्र जैन को इसका पुरूस्कार 1993 में तब मिला जब यशोधरा राजे ने उन्हें शिवपुरी से विधायक पद का टिकिट दिलवाकर चुनाव जितवाया। यह बात अलग है कि बाद में यशोधरा राजे सिंधिया से उनके संबंधों में खटास आ गई। देवेन्द्र जेन नगर पालिका अध्यक्ष पद का चुनाव भी लड़े लेकिन पराजित हो गए। इसके बाद उनके भाई जितेन्द्र जैन ने अपने अग्रज के सहयोग से राजनीति में सक्रियता बढ़ाई और जिला पंचायत अध्यक्ष पद पर उनकी नजर रहीं। अपने भाई के प्रभाव और धनबल के सामर्थ से वह जिला पंचायत अध्यक्ष बनने में सफल रहे हैं। उन्होंने पूर्व विधायक वीरेन्द्र रघुवंशी की पत्नि विभा रघुवंशी को एक बड़े अंतर से चुनाव में पराजित किया। जिला पंचायत अध्यक्ष के रूप में जितेन्द्र जैन का कार्यकाल आज भी याद किया जाता है। उन्होंने अध्यक्ष के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई और प्रशासन पर दबदबा कायम रखा। उन्होंने एक भ्रष्ट अधिकारी का मुंह भी अपने समर्थकों से काला कराया। इससे जहां उन्हें प्रशंसा मिली वहीं विवादों से भी उनका नाता जुड़ा। अध्यक्ष पद से हटने के बाद उन्हें पार्टी ने कोई ऐसा बड़ा दायित्व नहीं सौंपा जिससे उनकी अपनी पहचान बन सके। जितेन्द्र पूर्ण निष्ठा के साथ अपने भाई देवेन्द्र जैन से राजनैतिक रूप से जुड़े रहे और हर चुनाव में उन्होंने अपने बड़े भाई का साथ निभाया। कोलारस से देवेन्द्र जैन जब चुनाव जीते तब भी जितेन्द्र उनके साथ थे और जब हारे तब भी जितेन्द्र उनके साथा खड़े रहे। परन्तु 2023 के विधानसभा चुनाव में जितेन्द्र जैन की विधायक बनने की महत्वाकांक्षा जाग गई। उस समय कांग्रेस की हवा थी और हवा पहचान कर जितेन्द्र कांग्रेस के रथ पर सवार हो गए। 11 अगस्त 2023 को उन्होंने भाजपा छोड़ दी और 24 अगस्त को वह भोपाल में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए कांग्रेस में शामिल हो गए। शिवपुरी आकर उन्होंने माधव चौक पर यशोधरा राजे के खिलाफ जमकर आग उगली और कांग्रेस को संदेश दिया कि पार्टी उन्हें कोलारस अथवा शिवपुरी में से किसी भी क्षेत्र से चुनाव लड़ाने के बारे में सोच सकती हैं। बदरवास में पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह के समक्ष उन्होंने भारी भीड़ जुटाकर अपने जनाधार को प्रदर्शित किया। लेकिन कांग्रेस ने उन्हें निराश किया तथा वह टिकिट प्राप्त नहीं कर पाए। उधर भाजपा ने शिवपुरी से उनके भाई देवेन्द्र जैन को टिकिट दे दिया। इस पर जितेन्द्र जैन ने अपने भाई के लिए प्रचार किया और जनवरी 2025 में वह शिवपुरी में केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के समक्ष भाजपा में पुनः शामिल हो गए। उनके निवास स्थान पर ज्योतिरादित्य सिंधिया भी पधारे। भाजपा ने उन्हें शिवपुरी जिले में आजीवन सहयोग निधि का प्रभारी बनाया और उन्होंने इसकाम में पूर्ण मेहनत के साथ कार्य कर पार्टी के लिए फण्ड एकत्रित किया। भाजपा में आने के बाद भी उनके भाई से उनकी राजनैतिक दूरिया बढने लगी और अब स्पष्ट हो चुका हैं कि भाजपा राजनीति में अब दोनों भाईयों की लाईने अलग-अलग हैं। यह बात अलग है कि दोनों के गॉड फादर लगभग एक ही हैं।

किड्स पैराडाइज स्कूल में हुआ प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

बाड़ी (राज.)। सोमवार को बहुत ही दिव्य और भव्य कार्यक्रम में किड्स पैराडाइज स्कूल बाड़ी द्वारा इस वर्ष पांचवीं और आठवीं बोर्ड परीक्षाओं में असाधारण प्रदर्शन करके ए ग्रेड लाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार स्वरूप एक से बढ़कर एक शानदार उपहार और नकद धनराशि के चेक दिए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता वेदपाठी और वरिष्ठ आर्यसमाजी श्रीमती अनारदेवी गोयल ने की, जबकि विशिष्ट आमंत्रित अतिथि वरिष्ठ कांग्रेसी नेत्री एवं पूर्व जिलाध्यक्ष महिला कांग्रेस सेवादल श्रीमती आरती शिवहरे, भारत विकास परिषद की वरिष्ठ सदस्य श्रीमती वीणा शर्मा और आर्यसमाजी श्रीमती विमला मित्तल थीं।

सभी ने एक मत होकर बच्चों को सलाह दी कि पढ़ाई और प्रतियोगिताओं के हर चरण में सफल होने के लिए उन्हें हर हाल में मोबाइल के प्रति प्रेम छोड़ना ही होगा। श्रीमती आरती शिवहरे ने कहा कि हमारे पास बहुमूल्य कीमती चीज है वह है ज्ञान, जो हमें शिक्षा से प्राप्त होती है। हमें धन की, गहनों की सिक्योरिटी करनी पड़ती है। संभालकर रखना पड़ता है

कि उसकी कोई चोरी ना हो जाए, परंतु हमें अपने ज्ञान की हिफाजत नहीं करनी पड़ती। वह सदैव हमारे साथ रहता है और वह हमें शिक्षा से प्राप्त होता है। इसीलिए मैं कहना चाहूंगी कि बच्चों पढ़ो अपने पेरेंट्स और टीचरों का नाम रोशन करो। वहीं श्रीमती वीणा शर्मा ने बच्चों के प्रोत्साहन हेतु एक शानदार भजन का सुरीला गायन भी किया। पुरस्कार पाकर सभी विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों के चेहरे खुशी और गर्व से दमक रहे थे।

ज्ञातव्य हो कि अभी एक सप्ताह पहले किड्स पैराडाइज स्कूल के विद्यार्थियों के दसवीं और बारहवीं के मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए भी पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया था जिसमें पुरस्कार स्वरूप बड़े बड़े कूलर्स, माइक्रो वेव ओवन और ट्रॉली बैग्स दिए गए थे। कार्यक्रम आयोजक विद्यालय निदेशक सुनील मित्तल ने बताया कि इस वर्ष के परीक्षा परिणामों के मेधावी विद्यार्थियों के लिए पुरस्कार वितरण के दो चरण अभी और शेष हैं जिन्हें शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न किया जाएगा। कार्यक्रम उपरांत स्कूल निदेशक सुनील मित्तल ने सभी अभिभावकों और अतिथियों का कार्यक्रम में नियत समय से पधारकर उसे शानदार तरीके से सफल बनाने के लिए आभार प्रदर्शित किया।

बाड़ी (राज.)। आज किड्स पैराडाइज स्कूल में फिफ्थ और 8वीं क्लास के बच्चों का पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। इसी के साथ स्कूल के प्रिंसिपल सुनील मित्तल ने वरिष्ठ कांग्रेसी नेत्री एवं पूर्व जिलाध्यक्ष महिला कांग्रेस सेवादल श्रीमती आरती शिवहरे को विशिष्ट अतिथि के रूप में बुलाकर सम्मानित किया।

पं.गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास द्वारा 45वाँ निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर 26 एवं 27 जुलाई को

» स्वस्थ व्यक्ति को भी वर्ष में एक बार करवाना चाहिए स्वास्थ्य परीक्षण : विजय सिंह पटेल

» स्कूल कॉलेजों में प्रचार प्रसार हुआ तेज : रविशंकर द्विवेदी

» आपकी जानकारी रखी जाएगी गुप्त : अनिल सैनी

» यह 45वाँ पूर्णत :नि :शुल्क स्वास्थ्य शिविर है : वंदना बागरी

-डॉ. राकेश मिश्र अध्यक्ष-

सतना। पं.गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास द्वारा आगामी 26 एवं 27 जुलाई शनिवार एवं रविवार को सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर में दो दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का प्रचार-प्रसार किया गया।

सेवा न्यास के अध्यक्ष डॉ. राकेश मिश्र ने बताया है कि देश के सुप्रसिद्ध एक्शन कैंसर हॉस्पिटल नई दिल्ली और श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टिट्यूट द्वारा आयोजित 45वा मल्टी स्पेशलिटी हेल्थ चेकअप कैंप में विशेष रूप से बीपी, शुगर, ई. सी. जी., बी.एम.डी.,महिलाओं के लिए गर्भाशय कैंसर की पूर्व जांच, पुरुषों के लिए पी. एस. ए. कैंसर की पूर्व जांच मुंह गले एवं स्त्री स्तन कैंसर, के साथ विशिष्ट सेवाओं के लिए विशेषज्ञ डॉक्टर परामर्श मिलेगा। हृदय रोग, स्वस्थ चिकित्सा, पेट संबंधी, स्त्री रोग,हड्डी एवं जोड़ रोग किडनी रोग त्वचा विशेषज्ञ कैंसर रोग विशेषज्ञ विशेष रूप से ऐसे मरीज की जांच निःशुल्क होगी आगमन हो रहा है। डॉ. मिश्र ने आगे बताया की असुविधा से बचने के लिए ऑनलाइन पंजीयन प्रारंभ है सेवा न्यास की वेबसाइट www.nyas.gpmsevanyas.org पर किया जा सकता है।

स्वस्थ व्यक्ति को भी वर्ष में एक बार करवाना चाहिए स्वास्थ्य परीक्षणः विजय सिंह पटेल

पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास के कार्यालय प्रमुख विजय सिंह पटेल दो दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर की जानकारी देते हुए कहा कि स्वस्थ व्यक्ति को भी वर्ष में एक बार अपना स्वास्थ्य परीक्षण अवश्य करना चाहिए। सेवा न्यास की प्रचार-प्रसार की टोली बरदाडीह गढ़ी के पास, भर्जूना से जुड़े हुए गांव देहातों में व बदखर निवास करने वाले मरीजों को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर की जानकारी दी गई।

प्रचार-प्रसार हुआ तेजः रवि शंकर द्विवेदी

सेवा न्यास के कार्यकर्ता रवि शंकर द्विवेदी ने बताया कि मेडिकल कैंप का प्रचार-प्रसार ग्राम-लोहरौरा, बांधी, मौहार, तिघरा, पतौरा में व सभी ग्रामों की प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला व हाईस्कूल और हायर सेकंडरी स्कूलों व जिला चिकित्सालय में प्रचार प्रसार किया गया। तदुपरांत कृपालपुर व मटेहना एवं वेंकटेश मंदिर, सिमरिया चॉक, डिग्री कॉलेज, सर्किट हाउस चौक से झंकर टॉकीज ,वार्ड क्रमांक छःप्रचार प्रसार सघन रूप से सेवा न्यास कार्यकर्ता द्वारा किया गया एवं

मरीजों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया गया। रवि शंकर द्विवेदी ने बताया है कि अगर किसी मरीज को ऑनलाइन पंजीयन करने में परेशानी हो तो मौके पर भी पंजीयन किया जाएगा।

आपकी जानकारी रखी जाएगी गुप्तः अनिल सैनी

सेवा न्यास के कार्यकर्ता अनिल सैनी व उनकी टीम के द्वारा प्रचार प्रसार की संख्या में बद्रिका ऑटोमोबाइल, यश ऑटोमोबाइल, टीवीएस एजेंसी, एच.डी.एफ.सी. बैंक, बजाज फौजदार एजेंसी,ईगल होंडा हीरो एजेंसी, सीता राम पेट्रोल टंकी, महिन्द्रा वर्कशॉप शोरूम, टी.वी.एस.पारस, हुंडई, नेक्सा शोरूम, पूरी ट्रेडिंग स्वराज ट्रैक्टर, स्टार होंडा, बिट्स कॉलेज, सिविल लाइन कचहरी में स्वास्थ्य शिविर की जानकारी दी गई। सिविल लाइन कचहरी व ग्राम-सोनौरा व भटनवारा की बस्तियों में व वहां के हाई स्कूल और हायर सेकंडरी स्कूलों में प्रचार-प्रसार किया गया। साथ ही स्पोर्ट्स कमेटी के बच्चों को पम्पलेट देकर उनके मुहल्ले, गाँव में जानकारी देने के लिए घूरडाग चमन चौक चौराहा और एसबीआई बैंकइंडस्ट्रीज एरिया गहरा नाला के पास नई बस्ती, अमौधा नई बस्ती, महादेबा नई बस्ती, मल्लाहन टोला, धावरी,सिबिल लाईन थाना, वेंकट नंबर 1 स्कूल, एवं बाठिया कलां व बिड़ला साइडिंग में प्रचार-प्रसार किया गया। मैहर बायपास स्मार्ट सिटी गाड़ुया टोला बस्ती भल्ला फार्म नई बस्ती,गल्ला मंडी के समीप स्थित बस्तियों में प्रचार प्रसार किया गया।

यह पूर्णतः निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर हैः वंदना बागरी

सेवा न्यास की कार्यकर्ता वंदना अभिमन्यु सिंह बागरी द्वारा प्रचार-प्रसार की टोली नगर एवं जिले के सेवा बस्तियों में निवासरत मरीजों के डोर टू डोर जाकर दो दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

सतना बस स्टैंड में जिले भर से आए यात्रियों को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि माता बहनों के लिए कैंसर के पूर्व जांच की स्क्रीनिंग विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम के द्वारा किया जा रहा है इसलिए अधिक से अधिक संख्या में अपना अपना पंजीयन अवश्य करवा लें और निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाएं। सेवा न्यास के कार्यकर्ता ऐसे मरीज की खोज करने के लिए डोर टू डोर जाकर सघन संपर्क अभियान किया जा रहा है और किसानों मजदूर व जरूरतमंदों नागौद रोड बरेठिया में सेवा न्यास के कार्यकर्ताओं के द्वारा किया गया।

प्रचार प्रसार में प्रमुख रूप से श्रीमती मनीषा सिंह, श्रीमती शीलम सैनी, श्रीमती रश्मि सैनी, श्रीमती कीर्ति रतवानी, श्रीमती प्रिया त्रिपाठी, पूनम यादव, नितिन मिश्रा, रवि शंकर द्विवेदी, अनिल सैनी, विजय सिंह पटेल, राजेश त्रिपाठी नीलू एवं सेवा न्यास कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

वरिष्ठ भाजपा नेता रविन्द्र शिवहरे का जन्मदिन मनाया गया

- पेंशनर संघ के अधिकारियों व कर्मचारियों ने किया सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

शिवपुरी। सोमवार को वाचनालय भवन नदी पम्प पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वरिष्ठ भाजपा नेता रविन्द्र शिवहरे के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर पिता तुल्य सभी रिटायर पेंशनर संघ के सेवानिवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारियों ने शॉल, श्रीफल भेंट कर एवं केक काटकर आशीर्वाद प्रदान किया गया। इसके लिए रविन्द्र शिवहरे ने सभी का हृदय से आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि मैं ईश्वर से कामना करता हूं कि सदैव यूं ही उनका मुझे आशीर्वाद एवं प्रेम मिलता रहे। कार्यक्रम के दौरान समस्त रिटायर पेंशनर संघ के वरिष्ठजनों व पार्षदगणों के साथ पौधारोपण करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। यहां यह बताना आवश्यक होगा कि रविन्द्र शिवहरे को केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का वरदहस्त प्राप्त है। क्षेत्र में भी श्री शिवहरे काफी लोकप्रिय हैं। वे हमेशा जनता के कार्यों को करने में अग्रणी रहते हैं। इसी का परिणाम है कि श्री शिवहरे जहाँ भी जाते हैं उन्हें जनता का असीम प्यार मिलता है।

जाना था गंगा पार, प्रभु केवट की नाव चढ़ेः संजय कृष्ण शास्त्री

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। जाना था गंगा पार, प्रभु केवट की नाव चढ़े, वक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान श्रीराम ने गंगा मैया पार करने के लिए केवट की नाव का सहारा लिया। यह प्रसंग नौ दिवसीय संगीतमय श्रीराम कथा के दौरान राष्ट्रीय कथा व्यास पं. संजय कृष्ण शास्त्री ने अपने मुखारविंद से कही। बालाजी दरबार कैला देवी मंदिर मित्तल पेट्रोल पंप के बगल से एमएस रोड पर रमेशचंद्र अग्रवाल, दयाराम अग्रवाल, रामदास अग्रवाल, सुरेश चंद्र अग्रवाल द्वारा कराई जा रही श्रीराम कथा के दौरान श्रीराम वनगमन कथा केवट प्रसंग चित्रकूट निवास की

कथा सुनाते हुए संजय कृष्ण शास्त्री ने कहा कि भगवान राम-लक्ष्मण एवं माता जानकी चित्रकूट में मंदाकिनी स्नान करके निवास करते हैं। समस्त देवता कॉल भील के स्वरूप में प्रभु की सेवा में लग जाते हैं। चित्रकूट महिमा अमित कहीं महामुनि गई, आई नहाई चरित्र समेत दो भाई लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकट सो मदन मुनिवेश जानू ऋतुराज समेत कथा व्यास संजय के शास्त्री की ओजस्वी वाणी से श्रीराम कथा सुनने आ रहे श्रोतागण श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक श्रीराम कथा का रसास्वादन कर रहे हैं।

दो दिन केवल धूप छांव, नहीं हुई बारिश

ग्वालियर। सोमवार को कहीं धूप तो कहीं छांव रही, लेकिन एक बूंद भी बारिश नहीं हुई। जिसके चलते उमस ने शहरवासियों को पसीना पसीना कर दिया। मौसम वैज्ञानिकों ने अनुमान जताया है कि 10 जुलाई से पुनः सिस्टम सक्रिय हो रहा है। इसका असर आगामी कुछ दिनों तक रहेगा। इस दौरान झमाझम बारिश की भी पूरी संभावना है। फिलहाल मौसम सामान्य रहेगा। मंगलवार, बुधवार को बारिश के आसार कम है।

- उमस ने निकाला पसीना, धूप रही काफी तेज
- अब 10 जुलाई से पुनः सिस्टम सक्रिय होकर झमाझम के आसार

जुलाई माह का एक सप्ताह हो गया। शुरू में जिस तरह बारिश का दौर चल रहा था। वह अब 20 प्रतिशत भी नहीं है। यही वजह है कि बीते साल 2024 में जुलाई माह के 7 दिनों में करीब 171 मिमी बारिश हो गई थी। जबकि इस साल सात दिनों में 146 मिमी बारिश हो सकी है। हालांकि सामान्य औसत बारिश से 30 मिमी ज्यादा हो गई है। यदि सीजनल बारिश की बात करें तो सामान्य से ऊपर है। गत वर्ष 7 जुलाई तक सीजनल बारिश का कोटा 317 मिमी पर पहुंचा था। जो कि इस साल अब तक 397.6 मिमी व वार्षिक बारिश का आंकड़ा 436.1 मिमी हो गई है। उल्लेखनीय है कि ग्वालियर में जुलाई माह का सामान्य औसत बारिश का कोटा 312.2 मिमी है। जिसमें से जुलाई के सात दिनों में 146 मिमी बारिश हो चुकी है। शेष 22 दिनों में 165 मिमी बारिश और होनी है। वैसे अब तक सामान्य से 50 प्रतिशत ज्यादा बारिश हो गई है।

अब तिघरा बांध को केवल पांच फीट पानी की जरूरत

घाटीगांव व तिघरा के कैचमेंट एरिया में लगातार हो रही बारिश के चलते तिघरा बांध का जलस्तर 733.50 फीट तक पहुंच गया है, जो तिघरा बांध की कुल क्षमता का 75 प्रतिशत है। अब तिघरा बांध को लबालब भरने के लिये केवल 5 फीट पानी की ओर जरूरत है। जलसंसाधन एसडीओ बीरेन्द्र कुमार यादव ने बताया कि पहसारी बांध से भी पानी आ रहा है। इसीलिये केवल एक रात में एक फीट पानी बढ़ गया है। टीम लगातार भ्रमण कर तिघरा बांध पर नजर बनाये हुये है।

पारा 35 डिग्री पर, सामान्य से कम

स्थानीय मौसम कार्यालय के अनुसार बीते दिन रविवार को अधिकतम तापमान 35.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। जबकि सोमवार को 0.4 अंक घटकर 35 डिग्री सेल्सियस आंका गया। यह सामान्य से 1.8 डिग्री सेल्सियस मायनस में आंका गया। इसी तरह बीते दिन रविवार को न्यूनतम तापमान 26.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। जबकि सोमवार को 0.2 अंक बढ़कर रात का पारा 26.3 डिसे दर्ज हुआ। यह सामान्य से 1.3 डिग्री सेल्सियस मायनस में आंका गया। दोनों तापमान के बीच केवल 9 डिग्री का अंतर बना हुआ है। इससे पहले केवल 5 अंक का अंतर शेष रह चुका है।

पनिहार टोल प्लाजा पर बदमाशों का हंगामा, टोल कर्मियों के साथ मारपीट कर की फायरिंग

ग्वालियर। आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे पर शिवपुरी लिंक रोड स्थित पनिहार टोल प्लाजा पर रविवार सोमवार की दरम्यानी रात स्कॉर्पियो सवार बदमाशों ने जमकर हंगामा किया। टोल नहीं देने को लेकर बदमाशों ने पहले टोल कर्मियों से गाली-गलौज की, फिर सुपरवाइजर से मारपीट की और गोली चला दी। जिससे टोल पर दहशत फैल गई और टोल कर्मियों ने छिप कर जान बचाई। इसके बाद आरोपी टोल बैरियर तोड़कर फरार हो गए। घटना सीसीटीव्ही कैमरे में कैद हो गई है। घटना रविवार सोमवार की दरम्यानी रात 12.15 बजे की है। वारदात का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और सीसीटीव्ही कैमरों के फुटेज देखकर संदेहियों की तलाश शुरू कर दी है।

रविवार सोमवार की दरम्यानी रात शिवपुरी की ओर से सफेद रंग की स्कॉर्पियो क्रमांक एमपी07सीबी 3384 आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे पर पनिहार टोल प्लाजा की लेन नंबर-10 पर पहुंची। कार में चार युवक सवार थे और उनके पास फास्टैग नहीं

था। टोल कर्मचारी मनीष कुमार ने जब उनसे टोल देने को कहा तो वे भड़क उठे और उसे गालियां देने लगे। हालात बिगड़ते देख सुपरवाइजर शालू गुर्जर निवासी भंवरपुरा डाडा खिरक मौके पर पहुंचे और बदमाशों को समझाने की कोशिश की, लेकिन बदमाश गालियां देते रहें। जब शालू और मनीष ने विरोध किया तो स्कॉर्पियो से तीन बदमाश नीचे उतरे और दोनों से धक्का-मुक्की कर मारपीट करने लगे। मारपीट में शालू के बाएं हाथ, सिर और दाहिने पैर में चोट आई, जबकि मनीष को चेहरे और सिर में अंदरूनी चोटें लगीं। मारपीट की आवाज सुनकर टोल स्टाफ के राघवेंद्र, बनवारी और गनमैन रामस्वरूप जाटव वहां पहुंचे। तभी स्कॉर्पियो में बैठे एक युवक ने कार से बंदूक निकाली और सुपरवाइजर शालू गुर्जर को निशाना बनाकर गोली चला दी। लेकिन शालू समय रहते पीछे हट गया, जिससे वह बाल-बाल बच गया। इसके बाद सभी बदमाश स्कॉर्पियो में बैठे और टोल बैरियर तोड़ते हुए ग्वालियर की ओर भाग निकले। इस घटना के बाद टोल पर काम कर रहे कर्मचारी दहशत में आ गए। उन्हें डर था कि बदमाश दोबारा लौट सकते हैं।

टोल स्टाफ ने तुरंत पनिहार थाने में घटना की जानकारी दी। पुलिस रात में ही मौके पर पहुंची और घायल शालू गुर्जर की शिकायत पर स्कॉर्पियो सवार चार युवकों के खिलाफ मारपीट, फायरिंग और टोल बैरियर तोड़ने का केस दर्ज किया गया। पनिहार थाना पुलिस का कहना है कि चार आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है, संदेहियों की तलाश की जा रही है।

शहर को हरा भरा बनाने किया पौधारोपण

ग्वालियर। शहर हरा भरा रहे इसके लिए अमृत हरित महा अभियान के तहत नगर निगम द्वारा शहर में वृहद स्तर पर वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है। उद्यान पर्यवेक्षक अंकित परिहार ने बताया कि अमृत हरित महा अभियान के अंतर्गत मानपुर पहाड़ी आवासीय परिसर में महाकाल सेवा समिति के सदस्यों के सहयोग से निगम की पार्क टीम द्वारा 51 पौधों का रोपण एवं सफाई कार्य किया। इस अवसर पर उद्यान पर्यवेक्षक राजकुमार राजावत सहित महाकाल सेवा समिति के सदस्य उपस्थित थे। इसके साथ ही सूर्य नमस्कार चौराहे से मृगनयनी गार्डन तक डिवाइडर पर 500 कदम के पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय पार्षद प्रमोद खरे एवं पार्क पर्यवेक्षक दिनेश कुशवाह एवं पार्क विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे।

संभागीय आयुक्त कार्यालय तक हटाया अस्थाई अतिक्रमण

ग्वालियर। शहर में सुगम यातायात के लिए नगर निगम का मदाखलत अमला लगातार अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही कर रहा है। जिसके अंतर्गत शहर के सभी प्रमुख मार्केट एवं सड़कों पर अतिक्रमण हटाने के लिए सोमवार को अभियान चलाया गया। मदाखलत अधिकारी केशव सिंह चौहान ने बताया कि उपायुक्त सत्यपाल सिंह चौहान के दिये गए निर्देश के पालन में नाका चंद्रवनी से संभागीय आयुक्त कार्यालय रोड़ तक अस्थाई अतिक्रमण हाथ ठेले गुमटियों एवं कांउटरों इत्यादी को हटाया जाकर सामान जप्त करने की कार्यवाही की गई एवं फिर से ठेला इत्यादि न लगाने हिदायत दी गई। कार्यवाही में मदाखलत निरीक्षक विशाल जाटव एवं मदाखलत अमल मौजूद रहा।

युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं डॉ. मुखर्जीः जयप्रकाश राजौरिया

- डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी ने राष्ट्र निर्माण में निभाई अग्रणी भूमिकाः भगवानदास सबनानी

- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जयंती पर भाजपा की संगोष्ठी आयोजित

ग्वालियर। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जन्म कोलकाता के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। इंग्लैंड से वकालत की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने न केवल कानून के क्षेत्र में योगदान दिया, बल्कि शिक्षाविद के रूप में भी उल्लेखनीय कार्य किया। मात्र 33 वर्ष की उम्र में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने और भारतीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा दिया। आगे चलकर देश के पहले केंद्रीय मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री के रूप में कार्य किया। लेकिन उनके राष्ट्रवादी विचारों के चलते मतभेद उभरे और उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देकर 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी बनी। यह बात प्रदेश महामंत्री एवं

विधायक भगवानदास सबनानी ने सोमवार को बाल भवन में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कही।

संगोष्ठी में विधायक भगवानदास सबनानी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के हर एक कार्यकर्ता को डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पं दीनदयाल उपाध्याय जी के बारे में जानकारी होना चाहिए। एक ने प्रखर राष्ट्रवाद की बात और एक ने एकात्म मानव दर्शन का प्रतिपादन ग्वालियर में किया और वो विचार दुनिया में मान्य हो रहा है। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया ने कहा कि डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे। उन्होंने धारा 370 का संसद में विरोध किया और ऐलान किया था कि एक देश में दो प्रधान, दो निशान और दो संविधान नहीं चलेंगे। इसी संकल्प को लेकर वह 1953 में बिना परमिट कश्मीर पहुंचे जहां उन्हें गिरफ्तार कर नजर बंद कर दिया गया और 23 जून 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में जम्मू कश्मीर से धारा 370 और 35 ए को खत्म कर दुनिया को बता दिया कि हमारा नेतृत्व कितना शक्तिशाली है, जो पूरी दुनिया का नेतृत्व कर सकता है।

इस अवसर पर पूर्व सांसद विवेक शेजवलकर ने कहा कि भारत की एकता एवं अखंडता के लिए अपने प्राणों की बलिदान देने वाले प्रखर राष्ट्रवादी विचारक व महान शिक्षाविद थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश की एकता एवं देशवासियों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। जब वे जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 के विरोध में सत्याग्रह करते हुए सीमा पार गए और वहीं हिरासत में रहते हुए उनका निधन हो गया। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष अभय चौधरी, महेंद्र यादव, भाजपा नेता आशीष प्रताप सिंह राठौड़, पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता, पूर्व जिलाध्यक्ष देवेश शर्मा, गंगाराम बघेल, पूर्व साडा अध्यक्ष जय सिंह कुशवाह, अशोक शर्मा, विनोद शर्मा, राजू पलैया, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राकेश जादौन, अशोक जैन, राकेश माहौर, किशन मुद्गल, जितेंद्र गुर्जर, अशोक जादौन उपस्थित थे।

कार्य में लापरवाही बरतने पर उपयंत्री महेन्द्र प्रसाद अग्रवाल निलंबित

ग्वालियर। चेतकपुरी चौराहा से स्वर्णरेखा तक वाया माधवनगर गेट और बसंत विहार स्ट्रॉम वाटर लाइन निर्माण के बाद चेतकपुरी चौराहे से ऑडिट भवन तक नवीन डामर रोड निर्माण कार्य के पर्यवेक्षण में लापरवाही बरतने पर उपयंत्री जल प्रदाय कार्यरत प्रभारी सहायक यंत्री पीआईयू शाखा महेन्द्र प्रसाद अग्रवाल को निलंबित किया गया।

निगम आयुक्त संघ प्रिय द्वारा जारी आदेशानुसार चेतकपुरी चौराहा से स्वर्णरेखा तक वाया माधवनगर गेट और बसंत विहार स्ट्रॉम वाटर लाइन निर्माण के बाद चेतकपुरी चौराहे से ऑडिट भवन तक नवीन डामर रोड निर्माण कार्य अनुबंधित ठेकेदार से कराया गया जो कि वर्षाकाल के प्रारंभ में ही जगह जगह पर रोड धंसाव हो गया, जिस कारण नवीन निर्मित रोड क्षतिग्रस्त हो गयी। जिससे नगर निगम की छवि धूमिल हुई है तथा उक्त कार्य के निर्माण में उपयंत्री जल प्रदाय कार्यरत प्रभारी सहायक यंत्री पीआईयू शाखा महेन्द्र प्रसाद अग्रवाल द्वारा लापरवाही बरतने पर निलंबित किया गया। निलंबन की अवधि में इनका मुख्यालय जल प्रदाय विभाग नगर निगम रहेगा।

नेत्र परीक्षण शिविर में 65 कर्मचारियों ने लिया लाभ

ग्वालियर। नगर निगम द्वारा निगम कर्मचारी एवं उनके परिवारजनों के लिए साइट केयर संस्था के माध्यम से चार दिवसीय नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन रूपसिंह स्टेडियम के प्रवेश द्वार पर 10 जुलाई 2025 तक किया जा रहा है। जिसमें सोमवार को प्रथम दिवस 65 कर्मचारियों ने शिविर का लाभ लिया। नोडल अधिकारी जनकल्याण श्रीमती पूर्वी अग्रवाल ने बताया कि निगम में कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की सुविधा के लिए निशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन 7 से 10 जुलाई तक सुबह 10 से सायं 4 बजे तक किया जा रहा है। जिसमें निगम कर्मचारी स्वयं एवं अपने परिवार के सदस्यों को ले जाकर आंखों की जांच करा सकते हैं।

सभापति तोमर ने कहा, परिषद के निर्देशों का पालन करें अधिकारी

- परिषद की बैठक में पार्षदों ने सीवर सफाई व अधिकारियों की मनमानी की शिकायत की

ग्वालियर। नगर निगम परिषद के साधारण सम्मेलन में अधिकारियों की

मनमानी व हठधर्मिता को लेकर दोनों दलों के पार्षद आक्रोशित हो गये। विपक्ष के पार्षदों ने जमकर हंगामा किया। नेता प्रतिपक्ष हरिपाल, बृजेश श्रीवास, मंजू राजपूत, अनिल सांखला, ममता तिवारी का कहना था कि निगम अधिकारी सभापति के निर्देशों का भी पालन नहीं करते है। सभापति की आसंदी से सभापति मनोज तोमर ने निगमायुक्त को स्पष्ट निर्देश दिये कि परिषद के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिये। अन्यथा संबंधित अधिकारी के खिलाफ राज्य शासन को लिखा जायेगा।

भाजपा के पार्षदों का कहना था कि ईको ग्रीन कंपनी को लाभ दिलाने के लिये परिषद में राज व सेंगर सिक्योरिटी को दो करोड़ का भुगतान करने की तैयारी की जा रही है। जिससे पार्षदों को कानूनी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। सीवर पानी की समस्या को लेकर पार्षदों ने अपनी अपनी बात रखी। पार्षद अर्पणा पाटिल महापौर व विधायक प्रतिनिधि पर आरोप लगाये। सभापति मनोज तोमर ने निगमायुक्त संघ प्रिय को स्पष्ट निर्देश दिये कि पार्षदों की शिकायतों का तत्काल समाधान होना चाहिये। अधिकारियों का गलत व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

सभापति ने यह भी कहा कि परिषद एक्ट के हिसाब से चलती है। किसी को भी भ्रमित करने की कोशिश अधिकारी ना करें। एमआईसी परिषद में जो भी प्रस्ताव भेजें उसे गंभीरता से अध्ययन करके भेजें। पार्षद मंजू राजपूत ने टेंडर सेल में गड़बड़ियों का मामला उठाया। इसके प्रभारी राकेश कश्यप के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कहीं। निगमायुक्त ने कहा कि समस्याओं का निराकरण समय रहते किया जा रहा है और भी जो भी शिकायतें होंगी उनका निराकरण किया जायेगा। इसके साथ ही सर्वसम्मति से धारा 71 पर चर्चा कराई गई। चर्चा उपरांत सभापति तोमर द्वारा निगम आयुक्त संघ प्रिय को निर्देशित किया गया कि परिषद द्वारा जो जांच समितियां बनाई गई हैं, उन समितियों द्वारा जो दस्तावेज मांगे गए हैं तथा सदन के सदस्यों द्वारा जो पत्र लिखे गए हैं, उन सभी पत्रों की जानकारी सात दिवस में दें तथा इसके उपरांत चर्चा कर निर्णय सुनाया जाएगा। बैठक परिषद जारी रहते 17 जुलाई तक के लिए स्थगित की गई।

बैंसली नदी में डूबे युवक का शव 15 घंटे बाद मिला

ग्वालियर। बिजौली में बैंसली नदी में दोस्तों के साथ नहाने गये युवक की डूबकर मौत हो गई। युवक के दोस्तों ने उसे बचाने का प्रयास किया। लेकिन वह गहरे पानी में चला गया और डूब गया। घटना रविवार शाम की है। युवक के डूबने का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और नदी में डूबे युवक की तलाश के लिए एनडीआरएफ को बुलाया और रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया, लेकिन अंधेरा होने पर रविवार रात रेस्क्यू रोकना पड़ा था। सोमवार की सुबह एनडीआरएफ ने फिर रेस्क्यू शुरू किया तो कुछ ही देर के प्रयास में युवक का शव मिल गया। पुलिस ने शव को निगरानी में लेकर पोस्टमार्टम हाउस पहुंचा दिया है।

ग्वालियर के पारसेन गांव निवासी 20 वर्षीय देवेन्द्र उर्फ गोलू माहौर की बैंसली नदी में डूबकर मौत हो गई। देवेन्द्र रविवार को अपने कुछ दोस्तों के साथ पास ही बैंसली नदी में नहाने के लिए गया था। पिछले कुछ दिन में अच्छी बारिश के चलते नदी में पानी का बहाव ज्यादा था। सभी दोस्त नदी किनारे नहा रहे थे, लेकिन तभी गोलू कुछ अंदर चला गया। गहरे पानी में पहुंचने पर वह डूबने लगा। दोस्तों ने देखा तो उसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन कुछ ही देर में वह पानी में समा गया। तत्काल घटना की सूचना गोलू के परिजन व पुलिस को दी गई। बिजौली थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और एनडीआरएफ की मदद से रेस्क्यू शुरू किया, लेकिन रविवार देर शाम तक गोलू का पता नहीं चल सका और अंधेरा होने के कारण रेस्क्यू ऑपरेशन रोकना पड़ा। सोमवार सुबह एक बार फिर एनडीआरएफ की टीम ने 10 बजे बैसली नदी पर पहुंचकर रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। जहां पर घटना स्थल से 100 मीटर की दूरी पर मृतक गोलू का शव पुलिस को नदी की झाड़ियों में अटका मिला है। पुलिस ने शव को निकलवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बिजौली थाना पुलिस का कहना है कि नदी में नहाने गया युवक डूब गया है। रविवार रात तक रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया था, लेकिन अंधेरा होने के कारण रेस्क्यू रोकना पड़ा है। सोमवार सुबह एनडीआरएफ की टीम फिर से नदी में उतरी तो शव मिला गया है। मृतक के दोस्तों से घटना के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

मुरार में धूमधाम से निकली संकीर्तन यात्रा

ग्वालियर। आशाराम आश्रम दिल्ली ट्रस्ट के तत्वाधान में बारादरी चौराहा से भव्य हरिनाम संकीर्तन यात्रा निकाली गई। जिसमें बग्घी वाहन पर बिराजे गुरुदेव के श्री विग्रह फोटो पर भक्तों द्वारा पुष्पहार अर्पित कर व्यास पीठ से आशीर्वाद ग्रहण किया। साउंड व्यवस्था से युक्त लोडिंग वाहन पर भजनानंदी साधकों ने गुरु भक्ति से भरे भजनों का ऐसा समा बांधा कि हरि भक्त झूम झूमकर नाचे और मुरार की सड़कों को हरि रस से सराबोर कर दिया। युवा सेवा संघ के

कार्यकर्ताओं और संचालक अर्जुन भाई विजय महाराज के मार्गदर्शन में भव्य हरिनाम संकीर्तन यात्रा की शोभा देखते ही बन रही थी। रास्ते भर स्वागत सत्कार और हजारों ऋषि प्रसाद सत्साहित्य वितरण लगातार चलता रहा। जिसमें श्री योग वेदांत सेवा समिति युवा सेवा संघ महिला उत्थान मंडल के पदाधिकारी समेत भारी संख्या में श्रद्धालु भक्तगण वेश में शामिल रहे। 10 जुलाई गुरुवार को प्रातः 10 बजे से आश्रम प्रांगण में धूमधाम से गुरू पूर्णिमा पर्व मनाया जाएगा।

आज विधायक डॉ. सिकरवार अशोकनगर रवाना होंगे

ग्वालियर। प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी पर दर्ज हुई एफआई.आर को लेकर आज मंगलवार 8 जुलाई को कांग्रेस का अशोकनगर में जेल भरो आंदोलन होगा। आंदोलन में शामिल होने के लिये कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिकरवार कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ करीब सैंकड़ों गाडियों से एम.एल.बी. कॉलेज पर एकत्रित होकर कफिले के रूप में एक साथ अशोकनगर के लिये रवाना होंगे।

सांदीपनि विद्यालयों में चलेगा कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम

ग्वालियर। प्रदेश के सांदीपनि विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों का करियर मार्गदर्शन यूनिसेफके सहयोग से दिया जायेगा। कॅरियर रिप्रेशर प्रशिक्षण के द्वारा प्रत्येक विद्यालय के एक नोडल शिक्षक को संसाधनों को उपयोग करने के लिये सक्षम बनाया जा रहा है। नोडल शिक्षक के माध्यम से ही विद्यालय में कॅरियर मार्गदर्शन प्रदान करने वाली गतिविधियां संचालित की जायेंगी। कॅरियर मार्गदर्शन के संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग के आयुक्त लोक शिक्षण कार्यालय ने प्रदेश के समस्त सांदीपनि विद्यालय के प्राचार्यों को पत्र लिखकर दिशा-निर्देश जारी किये हैं।

महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए तिथि में की गई वृद्धि

ग्वालियर। उच्च शिक्षा विभाग ने सत्र 2025-26 में, महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए तिथि में वृद्धि की है। माननीय उच्च न्यायालय के आदेश के परिपालन में, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा स्नातकोत्तर स्तर सत्र 2025-26 में ऑनलाइन प्रवेश अंतर्गत सीएलसी चरण के लिए अद्यतन समय सारणी जारी की गई है। जारी समय सारणी के अनुसार सत्र 2025-26 में स्नातकोत्तर कक्षाओं में मेजर माइनर विषयों में एवं मेजर एवं माइनर विषय के अतिरिक्त अन्य विषय में प्रवेश लेने के इच्छुक विद्यार्थी, 7 से 10 जुलाई तक ऑनलाइन पंजीयनध्आवेदन कर सकेंगे। पंजीकृत आवेदनों के दस्तावेजों का सत्यापन 7 से 11 जुलाई तक होगा। मेजर माइनर के अलावा अन्य विषयों में आवेदन करने वाले विद्यार्थियों को साक्षात्कार के दिनांक, स्थान एवं समय की सूचना 14 जुलाई को दी जाएगी। मेजर माइनर के अलावा अन्य विषयों में आवेदन करने वाले विद्यार्थियों के साक्षात्कार एवं पोर्टल पर अंकों की प्रविष्टि 16 से 17 जुलाई तक होगी। विद्यार्थियों को महाविद्यालयों में सीट का आवंटन 21 जुलाई को होगा। आवंटित महाविद्यालय में प्रवेश शुल्क का भुगतान 21 से 25 जुलाई तक किया जा सकेगा। आवंटित महाविद्यालय में शुल्क भुगतान की अंतिम तिथि तक प्रवेश शुल्क का भुगतान किए गए आवेदकों का ही प्रवेश मान्य होगा।

पौधारोपण के लिए अत्याधुनिक तकनीक का किया जाएगा उपयोग

ग्वालियर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश की स्व-सहायता समूह की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिये प्रदेश सरकार द्वारा महात्मा गांधी नरेगा अंतर्गत 'एक बगिया मां के नाम' परियोजना शुरू की गई है। इसके अंतर्गत स्व-सहायता समूह की महिलाओं की निजी भूमि पर फलोद्यान की बगिया विकसित की जाएगी। प्रदेश में ऐसा पहली बार होगा जब अत्याधुनिक तरीके पौधरोपण का कार्य किया जाएगा। ऐप के माध्यम से हितग्राहियों का चयन किया जाएगा।

कार्यालय, सेनानी, 13वीं वाहिनी विशेष सशस्त्र बल,
सिकंदर कम्पू लश्कर ग्वालियर, (म0प्र0)
E-mail : co13bn_saf@mppolice.gov.inफोन न0 0751–2445356

क0/13वीं बटा0/ग्वा0/सा0अ0/ई–टेंण्डर/ 852 /25 दिनांक 02/07/25

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

13वीं वाहिनी विसबल ग्वालियर (म0प्र0) में वित्तीय वर्ष 2025–26 में मॉग संख्या 003–2216 आवास–05–053 9999–9545 विभागीय परिसंपतियों का संधारण– 33 अनुरक्षण कार्य–001 स्थाई संपतियों का अनुरक्षण मद में आवासीय भवनों के अन्तर्गत प्रांप्त आवंटन राशि से वाहिनी की टकसाल आवासीय लाईन की उपरी मंजिल के 10 छज्जों के पिलर खडे कर छज्जा मरम्मत कार्य ई–टेण्डर खुली निविदा के माध्यम से कराया जाना है। उक्त कार्य म0 प्र0 भण्डार कय नियम तथा सेवा उपार्जन नियम 2015 यथा संसोधित 2022 की कंडिकाओं में निहित बिन्दु क0 10.1 खुली निविदा अनुसार किया जाना है। जिस हेतु निविदाऐं https://mptenders.gov.in पर आमंत्रित की गई है। जिसकी जानकारी www.mppolice.gov.in पर भी देखी जा सकती है। प्राप्त निविदाऐं इकाई में गठित समिति द्वारा दिनांक 24/07/2025 को समय 15 :00 बजे खोली जावेगी, कार्य का विवरण निम्नानुसार है:–

क0	कार्य का विवरण	कार्य का क्षेत्र	निविदा प्रपत्र शुल्क	कार्य की अनुमानित लागत राशि जीएसटीसहित	ईएमडी राशि	सम्पूर्ण कार्य की अवधि
1	म0प्र0पु0हा0का0 लिमि0 ग्वालियर प्रॉक्कलन अनुसार वाहिनी की टकसाल आवासीय लाईन की उपरी मंजिल के 10 छज्जों के पिलर खडे कर छज्जा मरम्मत कार्य *(ठेका पद्दति द्वारा)	13वीं वाहिनी विसबल ग्वालियर (म0प्र0)	रु0–1,000 /– (एक हजार मात्र)	87819/–	2635/–	60 दिवस

समय सारणीः–

क0	विवरण	दिनांक एवं समय
1	निविदा प्रकाशन दिनांक	दिनांक 03/07/2025 के 10:00 बजे
2	निविदा जमा करने की प्रारंभ दिनांक	दिनांक 03/07/2025 के 10:00 बजे से
3	निविदा जमा करने की अंतिम दिनांक	दिनांक 23/07/2025 के 14:00 बजे से
4	निविदा खोलने की दिनांक एवं स्थान	दिनांक 24/07/2025 के 15:00 बजे सेनानी कार्यालय 13वीं वाहिनी विसबल ग्वालियर

तकनीकी निविदा– प्राइज पार्ट को छोडकर अन्य सभी दस्तावेज इसी भाग में रहेगे।
व्यावसायिक निविदा– इस भाग में मरम्मत कार्य की कीमत टैक्स दर सहित व कुल मूल्य दर्शायी जाये।
1– उपरोक्त वाहिनी की टकसाल आवासीय लाईन की उपरी मंजिल के 10 छज्जों के पिलर खडे कर छज्जा मरम्मत कार्य कराये जाने हेतु आवश्यक जानकारी एवं टेण्डर फार्म प्राप्त करने हेतु इच्छुक निविदाकर्ता के लिये निविदा प्रपत्र शुल्क राशि रु0 1000/– (एक हजार रूपये मात्र) 8443– सिविल जमा–0055– पुलिस–800– अन्य जमा मद में अधोहस्ताक्षरकर्ता के पक्ष में ऑन लाईन जमा करना अनिवार्य होगा।
2– निविदा की विस्त्रित जानकारी म0 प्र0 पुलिस की बेवसाईड www.mppolice.gov.in पर देखी जा सकती है एवं निविदाऐं https://mptenders.gov.in पर दिनांक 03/07/2025 से 23/07/2025 तक आमंत्रित की गई है, जिसे दिनांक 24/07/2025 को समय 15:00बजे खोला जावेगा।

G15259/25

सेनानी
13वीं बाहिनी विसबल ग्वालियर

संपादकीय

पाकिस्तान के साथ-साथ चीन के मोर्चे पर भी भारत को चुनौती, संघर्ष के कई मोर्चों पर तैयारी की जरूरत

यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि पाकिस्तान और चीन की दोस्ती भारत की वजह से है। दरअसल, भारत दुनिया में तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था है और चीन भविष्य की संभावनाओं को लेकर इससे चिंतित है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत के 'आपरेशन सिंदूर' की सफलता ने दुनिया को यह साफ संदेश दिया है कि सीमा पार से आतंकवाद को अब कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पाकिस्तान भी अब दबी जुबान में यह स्वीकार कर रहा है कि चार दिन के सैन्य संघर्ष के दौरान भारत के लक्षित हमलों से उसे नुकसान झेलना पड़ा है। वह भी ऐसी स्थिति में जब चीन और तुर्किये न केवल कूटनीतिक, बल्कि तकनीकी और हथियारों की आपूर्ति में भी पाकिस्तान का सहयोग कर रहे थे। इस संघर्ष में चीन और तुर्किये की भूमिका पहले भी उजागर हो चुकी है, लेकिन अब भारतीय सेना के उप प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने खुलासा किया है कि चीन भारतीय सैन्य तैनाती की पाकिस्तान को सीधी जानकारी दे रहा था। यही नहीं, चीन ने पाकिस्तान के चेहरे का इस्तेमाल कर इस संघर्ष को अपने हथियारों के परीक्षण की प्रयोगशाला की तरह लिया। हालांकि, भारतीय सैन्य बलों की जवाबी कार्रवाई ने चीन के इस परीक्षण के नतीजों की सच्चाई भी सबके सामने ला दी है। चीनी हथियारों के हर वार को नाकाम कर भारत ने यह साबित कर दिया है कि उसके सुरक्षा कवच को भेदना इतना आसान नहीं है। मगर, पाकिस्तान को चीन और तुर्किये का साथ मिलने से यह बात भी साफ हो गई है कि भविष्य में भारत के लिए चुनौतियां और बढ़ेंगी, जिनसे निपटने के लिए कई मोर्चों पर तैयारी की जरूरत है। भारत दुनिया में तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था है यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि पाकिस्तान और चीन की दोस्ती भारत की वजह से है। दरअसल, भारत दुनिया में तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था है और चीन भविष्य की संभावनाओं को लेकर इससे चिंतित है। इसलिए वह कूटनीतिक तरीके से पाकिस्तान को अपने पाले में बनाए रखना चाहता है। संकट के दौरान पाकिस्तान की मदद करने से भी वह पीछे नहीं हटता है। इसके पीछे चीन के अपने निजी स्वार्थ निहित हैं। उधर, तुर्किये भी पाकिस्तान का मददगार बना हुआ है, लेकिन भारत को सीधे तौर पर तुर्किये से कोई खतरा नहीं है। चीन से चुनौती इसलिए है, क्योंकि पाकिस्तान की तरह उसके साथ भी भारत की सीमा लगती है। भारत और चीन को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) विभाजित करती है और चीन यहां पर घुसपैठ की नाकाम कोशिश करता रहता है। भारतीय सेना के उप प्रमुख के मुताबिक, सात से दस मई के बीच हुए सैन्य संघर्ष के दौरान पाकिस्तान सिर्फ सामने नजर आ रहा था, पर्दे के पीछे चीन और तुर्किये उसे हरसंभव सहायता दे रहे थे। चीन अपने उपग्रहों का उपयोग भारतीय सैन्य तैनाती की निगरानी के लिए कर रहा था। बहरहाल, रक्षा मामलों में चीन और पाकिस्तान को अलग-अलग करके देखना सही नहीं होगा। 'आपरेशन सिंदूर' के बाद यह तस्वीर साफ हो गई है कि चीन और पाकिस्तान ने अपनी रक्षा रणनीतियों में गहरा तालमेल बना लिया है। जब कभी पाकिस्तान से भारत के सैन्य टकराव की स्थिति आएगी, चीन भले ही परोक्ष रूप से, लेकिन उसमें खास भूमिका निभाएगा। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए भारत को खुद को तैयार करना होगा। रक्षा उद्योग को अनुसंधान और विकास पर अधिक निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, ताकि रक्षा मामलों में भारत की आत्मनिर्भता को मजबूत किया जा सके। कूटनीतिक स्तर पर विभिन्न देशों से संबंधों को सुदृढ़ करने के प्रयासों में भी तेजी लानी होगी, ताकि जरूरत के समय उनका साथ मिल सके।

अगर हमने कभी किसी को गपशप में डूबे हुए देखा हो तो गौर करने लायक बात यह होती है कि उनके चेहरे अलग ही आभा और जिज्ञासा से भरे हुए नजर आते हैं। कुछ देर से लेकर घंटों तक का पता नहीं चलता और वक्त खूबसूरती के साथ गुजरता है। हालांकि, गपशप को तीन प्रकार में विभाजित किया जा सकता है- तटस्थ, सकारात्मक या नकारात्मक। शोध हमें बताते हैं कि गपशप का अधिकांश हिस्सा तटस्थ होता है। यह दूसरों से जुड़ने के लिए सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। संसार में लगभग अस्सी फीसद गपशप तटस्थ होती है।

गपशप करने से तनावमुक्त और तरोताजा हो जाता है मन, शायर गुलजार ने इसको लेकर कही है दिल खुश कर देने वाली बात

गपशप के समय न तो विषय की जरूरत होती है, न किसी तरह के शब्द सौंदर्य की। इसीलिए गपशप करते-करते नए तरह के विचार और नई-नई कल्पनाओं की उत्पत्ति भी सहज ही हो जाती है। गपशप दरअसल मानसिक या आत्मिक स्तर पर किसी के मिजाज को समझने का मीटर है। अगर हमने कभी किसी को गपशप में डूबे हुए देखा हो तो गौर करने लायक बात यह होती है कि उनके चेहरे अलग ही आभा और जिज्ञासा से भरे हुए नजर आते हैं। कुछ देर से लेकर घंटों तक का पता नहीं चलता और वक्त खूबसूरती के साथ गुजरता है। हालांकि, गपशप को तीन प्रकार में विभाजित किया जा सकता है- तटस्थ, सकारात्मक या नकारात्मक। शोध हमें बताते हैं कि गपशप का अधिकांश हिस्सा तटस्थ होता है। यह दूसरों से जुड़ने के लिए सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। संसार में लगभग अस्सी फीसद गपशप तटस्थ होती है। सकारात्मक बातचीत वह होती हैं, जब एक जैसे वातावरण में सबके मिलते-जुलते अनुभव हों। मिसाल के तौर पर किसी महंगे शापिंग माल से लौटकर वहां की खरीदारी या किसी रेस्तरां से लौटकर उसकी तारीफ पर गपशप। नकारात्मक गपशप किसी को बदनाम करने के लिए होती है। इससे दूर ही रहना चाहिए। हमें गपशप इतनी मजेदार क्यों लगती है? एक कारण यह है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। दूसरे शब्दों में कहें तो लोगों को अपने समाज और परिचितों के जीवन में दिलचस्पी होती है। दरअसल, गपशप अगर नकारात्मक न हो तो यह गलत नहीं होती। अक्सर हल्की-फुल्की बातचीत करते-करते कुछ न कुछ उपयोगी और जरूरी जानकारी भी मिल जाती है। कुछ समय पहले एक फिल्म में संवाद सुना था कि यारों के साथ गपशप तन-मन को रूई-सा हल्का कर देती है। दार्शनिक लाओत्से तुंग ने कहा है कि जिस बात से जीवन सुंदर बनता है, वह करने में हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। गपशप एक प्रयासरहित बातचीत होती है, जो मन को तनावमुक्त करके तरोताजा करती चली जाती है। सकारात्मक हार्मोन का स्राव शुरू हो जाता है। जब भी हम किसी गपशप में शामिल होते हैं और निकटता की भावना महसूस करते हैं, तो मस्तिष्क 'डोपामाइन' या अच्छा महसूस कराने वाला रसायन छोड़ता है। तब बिना कोशिश के ही दिल से एक स्वाभाविक हंसी फूट पड़ती है। ताली भी खुद-ब-खुद बज जाती है। यह है गपशप का जादू। गपशप के समय न तो विषय की जरूरत होती है, न किसी तरह के शब्द सौंदर्य की। इसीलिए गपशप करते-करते नए तरह के विचार और नई-नई कल्पनाओं की उत्पत्ति भी सहज ही हो जाती है। गपशप दरअसल मानसिक या आत्मिक स्तर पर किसी के मिजाज को समझने का मीटर है। जो इंसान मजेदार गपशप करता है, वह न केवल अपना, बल्कि औरों का भी भला करता जाता है। मनोवैज्ञानिक एडलर के प्रयोग में गपशप एक औषधीय गुण से युक्त वार्तालाप है। इससे अनेक मानसिक-शारीरिक रोगों का बिना दवाई के इलाज हो जाता है। अक्सर देखा गया है कि हम सबके मिजाज का 'बैरोमीटर' बहुत कम अंतराल पर बदलता ही रहता है। कभी बिगड़ता है, कभी सुधरता है। इसे संतुलित करना चुनौतीपूर्ण लगने लगता है। मगर गपशप इस बदलते मिजाज को सकारात्मक खाद-पानी देकर उदासी और गतिहीनता को खत्म करती है। गपशप करते हुए बोली और शब्द के चलन और शैली वाले पहलू कुछ भी हों, इसमें शक नहीं कि थोड़े-थोड़े अंतराल पर की जाने वाली गपशप से मन का उत्साह जीवंत बना रहता है। सामाजिक जीवन के इतिहास में पहनने, ओढ़ने और गृह सज्जा को भले ही एक अतिरिक्त योग्यता की संज्ञा दी गई हो, मगर गपशप एक ऐसी आदत है, जो हमेशा ताजा रहती है। जाहिर है कि आपस में होने वाली कोई गपशप जब शुरू की जाती है तो बतरस की इस दिलचस्पी के केंद्र में अपने परिचित, शौक, सपने, अनुभव आदि होते हैं। एक अच्छी गपशप हमारे सोचने, बात करने और चीजों का विश्लेषण करने के तरीके को बदलने की शक्ति रखती है। हमसे गपशप करने वाले मित्र हमारा ध्यान शीघ्रता से आकर्षित करने के लिए चीजों को जटिल ढंग से बताने के बजाय सरस, नाटकीय और वर्णनात्मक ढंग से बताना पसंद करते हैं, जिससे मस्तिष्क में उत्तेजना की तीव्र प्रतिक्रिया होती है। दिमाग सतर्क हो जाता है।

कुछ लोग अलग-अलग तरह से किस्से सुनाते हैं, उनमें उपन्यास, कहानी, कविता-सा रस, नाटक, रहस्य, सूक्ति सुधा आदि कई शैलियों को समझने में उनसे सुनी हुई गपशप ही प्रवीण बना देती है। किस्सागोई करने वाले भी मुहल्ले की गपशप को बहुत बारीकी से समझते हैं और अपने कहने के अंदाज को बेहतर करते जाते हैं। जाने माने शायर गुलजार ने यह बात अपने साक्षात्कार में स्वीकार भी की है कि वे लोगों की गपशप को ध्यान से सुनकर उसे अपने गीतों में कहीं न कहीं शामिल करते रहते हैं। हर गपशप अपने अनूठे परिप्रेक्ष्य के साथ संपन्न होती है। अगर हम बातों के रसिया तथा औरों की गपशप को सुनने के भी शौकीन हैं, तो हमें अपना दृष्टिकोण बनाने में मदद मिलेगी। इस दुनिया में बहुत सारे लोग धीर-गंभीर चोले को पहनकर अपने इर्द-गिर्द खोखलापन बुन देते हैं। उनके लिए गपशप करना बेवकूफी और समय की बर्बादी है। ऐसे लोगों को अपनी मानसिक सेहत और गपशप करने वालों की हाजिरजवाबी की तुलना करनी चाहिए। सकारात्मक गपशप करने वालों के खिले चेहरे और साफ दिल उनसे कहीं अधिक ही सेहतमंद मिलेंगे।

विकराल होता जलवायु परिवर्तन का संकट, बादल फटने से बाढ़ और भूस्खलन का खतरा

भारत को भी अब हाइड्रोजन सौर पन-पवन और परमाणु ऊर्जा की ओर बढ़ना चाहिए ताकि समूचे उत्तर भारत पर फैले जहरीली हवा और धूल के बादल छंट सकें। भारत में हर साल 16 लाख लोग वायु प्रदूषण से और छह लाख जल प्रदूषण से मरते हैं जो दुनिया में वायु प्रदूषण से मरने वालों का एक चौथाई और जल प्रदूषण से मरने वालों का आधा है। जून के दौरान इस साल इंग्लैंड और स्पेन में रिकार्ड गर्मी पड़ी। लंदन में तापमान 35 डिग्री था, जबकि स्पेन के दक्षिणी शहर कोर्दोबा में 41 डिग्री। स्पेन और पुर्तगाल के अन्य कई शहरों में भी पारा 40 डिग्री से ऊपर पहुंच गया। इटली, ग्रीस, फ्रांस और नीदरलैंड्स में भी भीषण गर्मी पड़ी। इस गर्मी से आठ लोगों की मौत हो गई और तुर्किये में दावानल से बचाने के लिए 50 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजना पड़ा। यूरोप में गर्मी का मौसम जून से लेकर जुलाई और अगस्त तक रहता है। जून में मौसम वैसा रहता है जैसा उत्तर भारत में सामान्य तौर पर अप्रैल के दौरान रहता है। हालांकि इस बार दिल्ली में भी अप्रैल का महीना रिकार्ड गर्मी का रहा। दूसरी तरफ हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी इलाकों में बादल फटने से बाढ़ और भूस्खलनों में 70 से अधिक लोग मारे गए और संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचा। जलवायु विज्ञानियों का कहना है कि यूरोप में धरती से उठती गर्मी को वायुमंडल पर बने उच्च दाब ने गुंबद की तरह घेर लिया था जिसे हीट डोम कहते हैं। जून की ग्रीष्म लहर उसी का परिणाम थी। इसी तरह के हीट डोम दो वर्ष पहले पश्चिमी अमेरिका, चीन और दक्षिणी स्पेन पर बने थे। कैलिफोर्निया की डेथ वैली में पारा 53.9 डिग्री और स्पेन में 46 डिग्री जा पहुंचा था। हीट डोम बनने और बादल फटने की घटनाएं वायुमंडल में गर्मी बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती जा रही हैं। धरती का औसत तापमान औद्योगिक युग से पहले की तुलना में 1.36 डिग्री बढ़ चुका है। इसे 1.5 डिग्री से आगे बढ़ने से रोकने के लिए पेरिस की जलवायु संधि हुई थी। तापमान में हुई वृद्धि के एक चौथाई का जिम्मेदार अकेला अमेरिका है। फिर भी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पेरिस संधि से हाथ खींच लिया था। विज्ञानियों को आशंका है कि चीन समेत बाकी देश जिस गति से अपना गैस उत्सर्जन घटा रहे हैं उससे धरती का तापमान 1.5 डिग्री पर नहीं रुक पाएगा। वह 2.7 डिग्री तक बढ़ जाएगा, जिसके भयावह परिणाम होंगे। नेचर पत्रिका के अनुसार तापमान वृद्धि को यदि 1.5 डिग्री तक न रोका गया तो इसकी सबसे बड़ी कीमत भारत को चुकानी पड़ सकती है। भारत के करीब 60 करोड़ लोग भीषण गर्मी से प्रभावित होंगे। गर्मी बढ़ने से मिट्टी तेजी से सूखेगी जिसे नम रखने के लिए बड़ी मात्रा में भूजल निकालना होगा और उसके स्रोत सूखने लगेंगे। भारत दुनिया में गेहूं और धान का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। भूजल सूखने से उनकी उपज पर असर पड़ेगा। बागवानी, पशुपालन और मत्स्यपालन भी प्रभावित होंगे। औसत तापमान में एक प्रतिशत की बढ़ोतरी बादलों में सात प्रतिशत अधिक पानी भर सकती है। अधिक पानी से लदे बादलों के फटने की आशंका बढ़ जाती है। बादल फटने से भीषण बाढ़ और भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है। भारत में हर साल दो से तीन हजार लोग बाढ़ और भूस्खलन की घटनाओं में मारे जाते हैं। तापमान बढ़ने से हिमालय के ग्लेशियरों पर भी बर्फ की जगह पानी बरसने लगा है जिसकी वजह से वे तेजी से पिघल कर छीज रहे हैं। गंगोत्री ग्लेशियर ही 15-20 मीटर प्रति वर्ष की गति से छीज रहा है और पिछले तीस वर्षों में लगभग 700 मीटर छीज चुका है। कुछ अन्य ग्लेशियरों की हालत और भी चिंताजनक है। कई ग्लेशियरों की बर्फ पिघलने से झीलें बन गई हैं, जिनके टूटने से बाढ़ आने का खतरा बना रहता है। गत मई में स्विट्जरलैंड का बर्च ग्लेशियर टूटने से उसकी तलहटी में बसा गांव ब्लाटन उसके मलबे में दब गया था। ग्लेशियरों के पिघलने से बाढ़ और भूस्खलन हो रहे हैं और इनके सूखने पर गंगा जैसी सदानीरा नदियां भी बरसाती नदियों में बदल सकती हैं और जलसंकट पैदा हो सकता है। जलवायु परिवर्तन की विभीषिका की रोकथाम के लिए जो वैश्विक सहमति बनी थी वह पिछले कुछ वर्षों में कमजोर हुई है। पहले तो कोविड महामारी ने आर्थिक संकट खड़ा किया। उसके बाद यूक्रेन पर रूस के हमले से ऊर्जा और अनाज के दामों में आग लगी और महंगाई बढ़ी। इससे लोगों और सरकारों दोनों के बजट बिगड़ गए। रही-सही कसर ट्रंप ने पेरिस संधि से हाथ खींचकर, व्यापार जंग छेड़कर और विश्व व्यवस्था को अस्थिर बनाकर पूरी कर दी। जो अमेरिका लोकतांत्रिक देशों को चीन और रूस की तानाशाही के जोखिम से बचाता था, उसे ट्रंप ने जोखिम में बदल दिया। अमेरिका पर भरोसा करने वाले देशों को उम्मीद थी कि उसकी सुरक्षा के साए में वे जलवायु परिवर्तन की रोकथाम पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे, लेकिन उन्हें अपने संसाधन अपनी सुरक्षा को मजबूत करने और नए बाजार खोजने में लगाने पड़ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन की तेज होती तपिश के बीच ही सरकारों को अपने बजट उस रक्षा सामग्री पर लगाने पड़ रहे हैं, जिसके निर्माण और प्रयोग से जलवायु परिवर्तन की गति और तेज होगी। गनीमत है कि एक तिहाई ग्रीनहाउस गैस छोड़ने वाला चीन स्वच्छ ऊर्जा और अक्षय ऊर्जा विकास के काम में लगा है। साइकिलों का देश अब बिजली की कारों, बैटरियों, स्वच्छ ऊर्जा और भविष्य की तकनीकों का सबसे बड़ा उत्पादक, निर्यातक और उपभोक्ता बन चुका है। भारत को भी अब हाइड्रोजन, सौर, पन-पवन और परमाणु ऊर्जा की ओर बढ़ना चाहिए, ताकि समूचे उत्तर भारत पर फैले जहरीली हवा और धूल के बादल छंट सकें। भारत में हर साल 16 लाख लोग वायु प्रदूषण से और छह लाख जल प्रदूषण से मरते हैं जो दुनिया में वायु प्रदूषण से मरने वालों का एक चौथाई और जल प्रदूषण से मरने वालों का आधा है। इसलिए 180 देशों की पर्यावरण प्रदर्शन तालिका में भारत 176वें स्थान पर है। यही हाल रहा तो भारत की जीडीपी का 6.4 से लेकर 10 प्रतिशत प्रदूषण की भेंट चढ़ने लगेगा। दो साल पहले हुए सर्वेक्षणों के अनुसार भारत के 85 प्रतिशत लोग जलवायु परिवर्तन से चिंतित हैं और 87 प्रतिशत चाहते हैं कि उसकी रोकथाम के उपाय किए जाने चाहिए। हमें यह भी समझना होगा जलवायु परिवर्तन कोई ऐसी जंग नहीं जिसे देश की सीमा पर सेना भेजकर जीत लिया जाए, बल्कि ऐसी जंग है जिसमें दुश्मन हमारे ही भीतर बैठा है जिसे निजी व्यवहार को बदले बिना नहीं जीता जा सकता।

सुप्रीम कोर्ट प्रशासन को धन्यवाद कि उसने पूर्व मुख्य न्यायाधीश डीवाइ चंद्रचूड़ की ओर से सरकारी बंगला न खाली करने पर केंद्र सरकार को पत्र लिखा कि उनसे बंगला खाली कराया जाए। यह अभूतपूर्व है। दिल्ली अथवा देश के अन्य हिस्सों में सरकारी बंगलों में किसी को भी तय अवधि से ज्यादा रहने की सुविधा नहीं दी जानी चाहिए। ऐसा कुछ विशेष परिस्थितियों में ही हो सकता है और अतीत में होता भी रहा है।

सरकारी बंगले पर रार, सुप्रीम कोर्ट को लिखना पड़ रहा पत्र

सच तो यह है कि कई राज्यों की राजधानियों में न जाने कितने अपात्र लोग सरकारी बंगलों में रह रहे हैं। सरकारी बंगले राष्ट्र की संपत्ति हैं। किसी भी सरकार को इन्हें किसी को मनमाने तरीके से आवंटित करने का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। अतीत में सुप्रीम कोर्ट ने इस तरह के मामलों में सरकारों को आदेश-निर्देश दिए हैं लेकिन उन पर पालन शायद ही हो रहा होगा। सुप्रीम कोर्ट प्रशासन को धन्यवाद कि उसने पूर्व मुख्य न्यायाधीश डीवाइ चंद्रचूड़ की ओर से सरकारी बंगला न खाली करने पर केंद्र सरकार को पत्र लिखा कि उनसे बंगला खाली कराया जाए। यह अभूतपूर्व है। दिल्ली अथवा देश के अन्य हिस्सों में सरकारी बंगलों में किसी को भी तय अवधि से ज्यादा रहने की सुविधा नहीं दी जानी चाहिए। ऐसा कुछ विशेष परिस्थितियों में ही हो सकता है और अतीत में होता भी रहा है। यह ठीक है कि पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने आठ माह बाद भी सरकारी बंगला खाली न कर पाने के कुछ कारण गिनाए हैं और इन कारणों को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता, लेकिन इतना तो है ही कि उन्हें नैतिकता के उच्च मानदंडों का पालन करना चाहिए। इसलिए करना चाहिए, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के तौर पर वे अपने फैसलों और फैसलों से इतर संबोधनों के जरिये नैतिक आचरण पर बल देते रहे हैं। सरकारी बंगला विवाद से उनकी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा। यह सही है कि वे सेवानिवृत्ति के बाद सरकारी बंगले में रहने के लिए तय किराया दे रहे हैं, लेकिन यह किराया कुल मिलाकर मामूली ही होता है और जिस इलाके में वे रह रहे हैं वह तो अति विशिष्ट क्षेत्र है। यह पहली बार नहीं है जब सरकारी बंगले को लेकर कोई विवाद उठा हो। इस तरह के विवाद पहले भी उठते रहे हैं। से सांसदों, पूर्व मंत्रियों की गिनती करना कठिन है जिन्होंने सांसद अथवा मंत्री न रहने के बाद सरकारी बंगला छोड़ने में आनाकानी की। कुछ नेताओं से तो जबरन बंगला खाली कराना पड़ा। यह भी एक तथ्य है कि कुछ नेता एवं पूर्व अधिकारी अथवा कथित विशिष्ट व्यक्ति सरकार की कृपा से लंबे समय तक सरकारी बंगलों में काबिज रहे। कुछ लोगों की ओर से यह भी कोशिश की गई कि उनके नेता की स्मृति संजोने के नाम पर उन्हें अथवा उनके स्वजनों को सरकारी बंगला सदैव के लिए आवंटित कर दिया जाए। दुर्भाग्य से ऐसे कुछ नेता अपनी कोशिश में कामयाब भी हो गए। ऐसा इसीलिए होता रहा, क्योंकि सरकारी बंगलों में किसे रहना चाहिए और किसे नहीं, इसके लिए जो नियम-कानून बने हुए हैं वे कुल मिलाकर कागजी ही अधिक हैं। इन नियमों पर सही तरीके से पालन मुश्किल से ही होता है। दिल्ली में केंद्र सरकार के बंगलों में अपात्र लोगों के रहने के किस्से तो चर्चा में आ जाते हैं, लेकिन राज्यों के ऐसे किस्से दबे-छिपे ही अधिक रहते हैं।

सच तो यह है कि कई राज्यों की राजधानियों में न जाने कितने अपात्र लोग सरकारी बंगलों में रह रहे हैं। सरकारी बंगले राष्ट्र की संपत्ति हैं। किसी भी सरकार को इन्हें किसी को मनमाने तरीके से आवंटित करने का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। अतीत में सुप्रीम कोर्ट ने इस तरह के मामलों में सरकारों को आदेश-निर्देश दिए हैं, लेकिन उन पर पालन शायद ही हो रहा होगा।

बिहार में बीते दो-तीन दिनों में हत्या की कई घटनाओं ने एक बार फिर मौजूदा सरकार के उन दावों को आईना दिखाया है, जिसमें वह अपनी सबसे बड़ी ताकत सुशासन और अपराध पर काबू करने को बताती रही है। विडंबना यह है कि जघन्य अपराधों के बढ़ते ग्राफ के बावजूद सरकार सब कुछ अच्छा होने के प्रचार पर जोर देती रही और दूसरी ओर जमीन पर हालत और बिगड़ती चली गई है।

बिहार में हुई हत्या की घटनाओं ने सामने ला दी सुशासन की हकीकत, लाचार हालत में राज्य की कानून व्यवस्था

बिहार में नीतीश कुमार की सरकार जितने वर्षों से सत्ता पर काबिज है, उतने में अब वह यह भी सफाई देने की हालत में नहीं है कि उसके कामकाज पर अतीत की छाया है। यह एक तरह से अपनी नाकामी को स्वीकार करने जैसा होगा। बिहार में बीते दो-तीन दिनों में हत्या की कई घटनाओं ने एक बार फिर मौजूदा सरकार के उन दावों को आईना दिखाया है, जिसमें वह अपनी सबसे बड़ी ताकत सुशासन और अपराध पर काबू करने को बताती रही है। विडंबना यह है कि जघन्य अपराधों के बढ़ते ग्राफ के बावजूद सरकार सब कुछ अच्छा होने के प्रचार पर जोर देती रही और दूसरी ओर जमीन पर हालत और बिगड़ती चली गई है। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि शुक्रवार देर रात पटना के केंद्र में स्थित बेहद सुरक्षित माने जाने वाले इलाके में शहर के एक कारोबारी की गोली मार कर हत्या कर दी गई और हत्यारा आराम से फरार भी हो गया। हत्या की घटना जिस जगह हुई, वहां से जिलाधिकारी का आवास और पुलिस थाना काफी नजदीक है। गौरतलब है कि पटना में जिस कारोबारी की हत्या की गई, करीब छह वर्ष पहले उनके बेटे को भी अपराधियों ने मार डाला था। एक अन्य घटना में शुक्रवार को ही राज्य के सीवान जिले के मलमलिया चौक पर अपराधियों ने सरेआम पांच लोगों को तलवार से काट डाला, जिसमें तीन लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई और दो बुरी तरह घायल हो गए। ऐसा लगता है कि राज्य की कानून-व्यवस्था पूरी तरह लाचार हालत में है, अपराधी बेखौफ हैं और सरकार के हाथ में शायद कुछ भी नहीं रह गया है। वरना क्या वजह है कि जघन्य अपराध एक तरह से राज्य में आम होते जा रहे हैं और पुलिस या कानून का डर कहीं नहीं दिखता है। राज्य में हत्या की घटनाओं और इनकी प्रकृति को देखते हुए स्वाभाविक ही ये सवाल उठेंगे कि ऐसे में आम लोग अपनी सुरक्षा को लेकर क्या सोचें। बिहार में नीतीश कुमार की सरकार जितने वर्षों से सत्ता पर काबिज है, उतने में अब वह यह भी सफाई देने की हालत में नहीं है कि उसके कामकाज पर अतीत की छाया है। यह एक तरह से अपनी नाकामी को स्वीकार करने जैसा होगा। इसके बावजूद राज्य में अपराधों की तस्वीर पर जब भी सवाल उठते हैं, तो सरकार में शामिल दल अतीत के कथित 'जंगल राज' की याद दिलाने लगते हैं। यह पूछा जाना चाहिए कि मौजूदा दौर में राज्य में जघन्य आपराधिक घटनाओं की जो हालत है, अपराधी बेलगाम दिखते हैं, तो इसे किस तरह के राज के रूप में देखा जाएगा!

कैप्टन कूल धोनी का 44वां जन्मदिन

रांची में दोस्तों के साथ मनाया बर्थडे, केक काटने से पहले इजाजत भी ली, बोले- केक कट कर दूं

टीम इंडिया को अपनी कप्तानी में 3 ICC ट्रॉफी दिलाने वाले महेंद्र सिंह धोनी ने सोमवार को अपना 44वां जन्मदिन मनाया। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें धोनी केक काटने से पहले दोस्तों से इजाजत लेते नजर आ रहे हैं। धोनी ने रांची स्थित अपने फार्महाउस पर करीबी दोस्तों के साथ बर्थडे सेलिब्रेट किया। वीडियो में दिख रहा है कि जैसे ही केक लाया जाता है, धोनी मुस्कराते हुए पूछते हैं, कट कर दूं? इस पर वहां खड़े एक दोस्त ने जवाब दिया %हां%। इसके बाद धोनी ने अपने सभी दोस्तों को केक खिलाया। तीन ICC ट्रॉफी जिताने वाले एकमात्र भारतीय कप्तान धोनी अब तक के एकमात्र भारतीय कप्तान हैं जिन्होंने भारत को तीन ICC ट्रॉफी, 2007 T20 वर्ल्ड कप, 2011 ODI वर्ल्ड कप और 2013 चैंपियंस ट्रॉफी जिताई हैं। उनके नेतृत्व में भारत टेस्ट में भी नंबर-1 टीम बना। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप उनके संन्यास लेने के बाद शुरू हुई। उन्होंने 2014 में टेस्ट से और 15 अगस्त 2020 को इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया था, लेकिन IPL में अब भी खेल रहे हैं।

वार्ड 18 आदर्श कॉलोनी में जल भराव के निराकरण के लिए सीएमओ को दिया ज्ञापन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड 18 में स्थित आदर्श कॉलोनी में बरसात का जल भराव होने से यहां रहने वाले नागरिक परेशान हैं। जल भराव के निराकरण के लिए सीएमओ को ज्ञापन भी दिया है। स्थानीय निवासी युवा समाजसेवी अरविंद श्रीवास्तव एवं रहवासियों द्वारा दिए गए ज्ञापन में लिखा है कि आदर्श कॉलोनी वार्ड 18 में बरसात का पानी चारों तरफ भर गया है,

जिससे यहां रहने वाले रहवासी अपने अपने घरों से निकलने में परेशान हो रहे हैं। वहीं कीचड़, दलदल से भी परेशानी हो रही है। बरसात का गंदा पानी भरा रहने से मच्छर भी पनप रहे हैं, जिससे बीमारियां फैलने का खतरा भी मंडरा रहा है। बरसात के इस जल भराव का सही निकास नहीं होने से उक्त समस्या का निराकरण नहीं होने से यहां रहने वाले सभी नागरिक परेशान हो रहे हैं। अरविंद श्रीवास्तव, अरबाज खान, अर्जुन, रिंकू भूपेश, बंटी महेश आदि रहवासियों ने सीएमओ वीरेंद्र रावत को ज्ञापन देकर जल भराव के निराकरण की मांग की है।

संजोग गुप्ता ICC के नए CEO बने: 2500 उम्मीदवारों में चुने गए, ओलिंपिक में क्रिकेट को रेगुलर खेल बनाने का लक्ष्य

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (ICC) ने संजोग गुप्ता को नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त किया है। वे सोमवार से ही कार्यभार संभालेंगे। संजोग, ICC के इतिहास में 7वें CEO होंगे। यह सिलेक्शन ऐसे समय हुई है जब क्रिकेट ओलिंपिक की ओर आगे बढ़ रहा है।

ICC चेयरमैन जय शाह ने ऐलान करते हुए कहा, संजोग का खेलों की रणनीति और कॉमर्शियलाइजेशन को लेकर अनुभव, क्रिकेट को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मदद करेगा।

2,500 उम्मीदवारों में चुने गए इस पद के लिए मार्च 2025 से 25 देशों से 2,500 से ज्यादा आवेदन आए। ICC की ।क्रऔर रेम्यूनरेशन कमेटी ने 12 उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट किया। अंतिम चयन नॉमिनेशन कमेटी ने किया, जिसमें, ICC डिप्टी चेयर इमरान ख्वाजा, ECB चेयर रिचर्ड थॉम्पसन, श्रीलंका क्रिकेट प्रेसिडेंट शम्मी सिल्वा, BCCI सचिव देवजीत सैकिया शामिल थे। यहां ICC बोर्ड ने सर्वसम्मति से संजोग गुप्ता को चुना।

कौन हैं संजोग गुप्ता? संजोग गुप्ता वर्तमान में जियो स्टार में स्पोर्ट्स और लाइव एक्सपीरिएंस के CEO हैं। उन्हें इस फील्ड में 20 साल से ज्यादा का अनुभव है। संजोग ने करियर की शुरुआत पत्रकार के रूप में की थी। 2010 में वे स्टार इंडिया से जुड़े। 2020 में डिज्नी स्टार के स्पोर्ट्स हेड बने। 2024 में वाइकाम-18 और डिज्नी स्टार के मर्जर के बाद जियो स्टार स्पोर्ट्स के CEO बने। ICC चेयरमैन जय शाह ने क्या कहा? संजोग की मीडिया-एंटरटेनमेंट समझ बेहतरीन है।

हर पौधा भविष्य की नींव है, इसकी रक्षा करना हमारा दायित्वः डॉ. सिकरवार

-बिस्मिल शिक्षा एवं जनकल्याण सेवा संस्थान द्वारा आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। आज के समय में पेड़ों का महत्व केवल ऑक्सीजन तक सीमित नहीं है, बल्कि ये जीवन के संतुलन और पृथ्वी की सेहत के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। प्रकृति और मानवता का अटूट रिश्ता है। पेड़ पौधे केवल हरियाली का प्रतीक नहीं, मानव जीवन के आधार स्तंभ भी हैं। हमें शुद्ध वायु के साथ पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने, जल संरक्षण, भूमि की उपजाऊ शक्ति बनाए रखने और जैव विविधता को संरक्षित करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हर पौधा भविष्य की नींव है, इसकी रक्षा करना हम सभी का दायित्व है । यह बात बिस्मिल फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ नरेश सिंह

सिकरवार ने कही। अध्यक्ष डॉ. सिकरवार बिस्मिल शिक्षा एवं जनकल्याण सेवा संस्थान एवं मप्र शिक्षक संघ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित संगोष्ठी सह पौधारोपण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर संगठन के सदस्यों, शिक्षकों, और स्थानीय नागरिकों की उपस्थिति में विभिन्न प्रकार के छायादार, फलदार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल हरियाली को बढ़ावा देना है, बल्कि समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना भी है। इस अवसर पर समाजसेवी डॉ. सिकरवार ने कहा कि जब हम एक पौधा लगाते हैं, तो वह केवल मिट्टी में जड़ें नहीं फैलाता, बल्कि हमारे भविष्य की नींव रखता है। आज जिस तेजी से पर्यावरणीय असंतुलन बढ़ रहा है, उसका समाधान तकनीक से नहीं, बल्कि प्रकृति से जुड़ाव से संभव है। हमें यह समझना होगा कि वृक्षारोपण एक पुण्य कार्य है, जो आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और समृद्ध पर्यावरण देने की दिशा में हमारा उत्तरदायित्व है। इस मौके पर विमलेश कुमार यादव, सतंजय मिश्रा, जगदीश शर्मा, रघुराज परमार, नरेंद्र सिकरवार, रूप सिंह, डॉ हरेंद्र तोमर आदि मौजूद रहे।

समाजसेवी मोहित जैन चीकू कार्याध्यक्ष मनोनीत

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। विगत दिवस जैसवाल जैन युवाजन की बैठक में सर्वसम्मति से चौधरी मोहित जैन (चीकू) को युवाजन का कार्याध्यक्ष मनोनीत किया गया।

वरिष्ठ समाजसेवी चौधरी मोहित जैन चीकू पटेल नगर दिल्ली का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। चीकू भाई सदैव देव शास्त्र गुरु, पीड़ित मानव सेवा, तीर्थयात्रा, जीवदया एवं समाजोत्थान जैसे कार्यों में सक्रिय रहते हैं। आप जैसवाल जैन समाज की अखिल भारतीय संस्थाओं अविवाहित प्रतिभाएं प्रस्तुति समूह के संरक्षक, सेवा न्यास एवं सन्मति फाउंडेशन सहित अनेक संस्थाओं के माध्यम से समाजसेवा के क्षेत्र में कार्यरत् होकर उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। अभी हाल ही में आपके संयोजकत्व में 800 यात्रियों को श्री

सम्मेद शिखरजी की यात्रा कराई गई थी। आपने श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सिहोनियांजी जिला मुरैना में तीन शिखर एवं तीन वेदियों का श्री चंद्रप्रभु जिनालय का भव्य निर्माण कराया एवं प्रतिमाएं स्थापित कराई।

श्री दिगंबर जैसवाल जैन समाज दिल्ली के युवाओं की सेवाभावी संस्था जैसवाल जैन युवाजन की सम्पन्न हुई बैठक में सर्वसम्मति से चौधरी मोहित जैन (चीकू) पटेल नगर दिल्ली को कार्याध्यक्ष मनोनीत किया गया। आपके कार्याध्यक्ष मनोनीत किए जाने पर सभी शुभचिंतकों एवं इष्टमित्रों ने पुष्पहार एवं पुष्पगुच्छों द्वारा स्वागत सम्मान किया। सभी ने बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

बुलवायो टेस्ट में मुल्डर ने 367 रन बनाएः विदेश में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले प्लेयर

हरारे, एजेंसी। बुलवायो में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन जिम्बाब्वे के खिलाफ साउथ अफ्रीका के कप्तान वियान मुल्डर ने 367 रन की ऐतिहासिक पारी खेली। लंच ब्रेक तक नाबाद रहने के बावजूद साउथ अफ्रीका ने अपनी पारी 626/5 पर घोषित कर दी, जिससे मुल्डर ब्रायन लारा के ऐतिहासिक 400 रन के रिकॉर्ड से 33 रन दूर रह गए।

मुल्डर के अलावा लुहान-डी-प्रिटोरियस ने 82 और डेविड बेडिंगम ने 78 रन की पारी खेली। जिम्बाब्वे से तनाका चिवांगा और कुंडे मतिजीमु को 2-2 विकेट मिले।

मुल्डर ने 297 गेंदों में ट्रिपल सेंचुरी पूरी की बतौर कप्तान अपना पहला टेस्ट खेल रहे वियान मुल्डर ने वीरेंद्र सहवाग के बाद सबसे तेज ट्रिपल सेंचुरी लगाई। सहवाग ने 2008 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ 278 गेंदों में यह कारनामा किया था। मुल्डर ने अपनी पारी में 49 चौके और 4 सिक्स भी लगाए।

साउथ अफ्रीका के लिए सबसे बड़ा स्कोर मुल्डर, हाशिम अमला के बाद ट्रिपल सेंचुरी लगाने वाले दूसरे साउथ अफ्रीकी बल्लेबाज बने। उन्होंने अमला के 311 रन के रिकॉर्ड को भी तोड़ा। मुल्डर ने ब्लेसिंग मुजारबानी की गेंद को कवर के जरिए बाउंड्री मारकर अमला का रिकॉर्ड पार किया।

विदेशी जमीन पर सबसे बड़ी टेस्ट पारी मुल्डर का 367 रन अब विदेश में टेस्ट में सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बन गया है। उन्होंने पाकिस्तान के हनिफ मोहम्मद का 1958 में वेस्टइंडीज के खिलाफ बनाया गया 337 रन का रिकॉर्ड तोड़ा। मुल्डर ने सनथ जयसूर्या (340), लेन हटन (364) और सर गैरी सोबर्स (365) जैसे दिग्गजों को भी पीछे छोड़ दिया।

समाजसेवी जगदीश चंद्र जैन का निधन, क्षेत्र में शोक की लहर

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। बरेह निवासी, सौम्य स्वभाव और सामाजिक सहयोग के प्रतीक जगदीश चंद्र जैन का सोमवार को आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन से समस्त जैन समाज, ग्राम बरेह और अम्बाह क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। स्व. जगदीश जी का पार्थिव शरीर उनके निज निवास जैन मंदिर, चुंगी नाका के सामने, अम्बाह से अंतिम दर्शन हेतु रखा गया, जहां बड़ी संख्या में

लोग श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचे।उनकी अंतिम यात्रा सोमवार दोपहर 1:00 बजे उनके निवास से प्रारंभ हुई, जो अम्बाह मुक्तिधाम पहुंची, जहां विधिपूर्वक अंतिम संस्कार सम्पन्न किया गया।एडवोकेट धर्मेंद्र जैन ने कहा कि वे एक जिंदादिल, सहज और कर्मठ व्यक्ति थे, जिनका गांव और समाज से गहरा जुड़ाव था। उनका योगदान हर सामाजिक एवं पारिवारिक आयोजन में सजीव रूप से देखा गया था।

पवित्र नगरी अमरकंटक में राष्ट्र संत चिन्मयानंद बापू की सात दिवसीय शिव महापुराण कथा प्रारंभ

-कलश यात्रा एवं शोभायात्रा में उमड़ा जनसैलाब

अनूपपुर/अमरकंटक। पवित्र नगरी अमरकंटक में गुरु पूर्णिमा महोत्सव के पावन अवसर पर विश्व कल्याण मिशन ट्रस्ट शाखा बिलासपुर के तत्वावधान में राष्ट्र संत परम पूज्य चिन्मयानंद बापू जी महाराज द्वारा सात दिवसीय शिव महापुराण कथा का भव्य शुभारंभ हुआ। यह आयोजन नगर परिषद कार्यालय के समीप स्थित मेला मैदान में विशाल पंडाल में किया जा रहा है। कथा का विधिवत शुभारंभ आज शाम 4 बजे पूज्य बापू जी के सान्निध्य में मंत्रोच्चार, वेदपाठ और धार्मिक विधियों के साथ हुआ। इससे पूर्व एक भव्य कलश यात्रा एवं शोभायात्रा नगर के

प्रमुख मार्गों से पारंपरिक वेशभूषा, लोकनृत्य, ढोल-ताशे और भजन-कीर्तन के साथ निकाली गई। नर्मदा मंदिर से प्रारंभ हुई यात्रा में 108 कलश लेकर सजीधजी महिलाएं सिर पर कलश धारण कर श्रद्धा एवं उल्लास से चल रही थीं। यह शोभायात्रा नर्मदा उद्गम कुंड पहुंची, जहां नर्मदा मंदिर के पुजारी उमेश द्विवेदी (बंटी महाराज) द्वारा मंत्रोच्चार के साथ कलश पूजन कराया गया। कथा में सम्मिलित होने के लिए मध्य प्रदेश,छत्तीसगढ़, हरियाणा,पंजाब, जम्मू-कश्मीर,दिल्ली सहित अनेक राज्यों से श्रद्धालु, भक्तजन एवं शिष्यगण बड़ी संख्या में अमरकंटक पहुंचे हैं। कथा स्थल पर भक्तों के लिए बैठने, दर्शन एवं सत्संग हेतु उत्तम व्यवस्थाएं की गई हैं। कार्यस्र5म प्रतिदिन शाम 4 बजे से प्रारंभ होकर रात्रि तक चलेगा।आयोजकों ने अधिकाधिक श्रद्धालुओं से भाग लेने की अपील की है।

टीबी मुक्त भारत की कार्यशाला शा. कन्या हायर सेकंडरी स्कूल में आयोजित की गई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/पोरसा। सोमवार को जिलाधीश मुरैना अंकित अस्थाना के निर्देशन में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पदमेश उपाध्याय के मार्गदर्शन में सघन टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत पोरसा ब्लॉक के उप स्वास्थ्य केंद्र पीपरीपूठ व शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पोरसा में क्षय जनजागरुकता गतिविधि आयोजित की गई, जिसमें सभी छात्र-छात्राओं को टीबी शिक्षा व क्षय उन्मूलन की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर जिला क्षय अधिकारी डॉ. नरेंद्र उपाध्याय ने बताया कि टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत संपूर्ण जिले में जनजागरुकता गतिविधि आयोजित की जा रही है, जिसमें संभावितों की स्क्रीनिंग कर जांच की

जा रही है। डीपीसी बृजेश सिंह राजपूत ने सभी छात्र-छात्राओं को टीबी के लक्षण, जैसे लंबी अवधि वाली खांसी, बुखार, छाती में दर्द रहना, भूख न लगना, भान कम होना, रात्रि में पसीना आना, गर्दन पर गठान, अत्यधिक कमजोरी आदि। उन्होंने बताया कि मरीज को पोषण राशि के रूप में 1000 रुपए हर माह मरीज के खाते में दिए जा रहे हैं, जिससे मरीज के पोषण में सुधार हो रहा है। इस अवसर पर जितेंद्र सिंह नरवरिया, विनोद सिंह तोमर, दीपक आशा, आशा सुपरवाइजर उपस्थित थे।

आदेश लहरी की आर्ट फॉर अर्थ मुहिमः 500 पौधों का किया रोपण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। जिले के भौंरासा निवासी युवा कलाकार आदेश लहरी द्वारा चलाई जा रही आर्ट फॉर अर्थ मुहिम ने एक और अहम मील का पत्थर पार किया। इस मुहिम के तहत, लहरी हर वर्षा ऋतु में पौधारोपण करके लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हैं। इस बार, उन्होंने टोंकखुर्द के पूर्व जनपद अध्यक्ष दशरथ मंडलोई के खेत पर 500 पौधों का रोपण किया और सभी को अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। आदेश लहरी एक मशहूर स्केच आर्टिस्ट भी हैं, जिन्होंने क्रिकेटर हार्दिक पंड्या, भागवताचार्य जया किशोरी, देवकीनंद ठाकुर और राष्ट्रवादी प्रवक्ता पुष्पेन्द्र कुलश्रेष्ठ सहित कई सेलिब्रिटीज के स्केच तैयार किए हैं और उन्हें भेंट किया है। लहरी की मुहिम का अनोखा पहलू यह है कि वे एक स्केच ऑर्डर पर 10 पौधे रोपण करते हैं, जिससे उनका कला और पर्यावरण संरक्षण दोनों एक साथ जुड़े हुए हैं। इस कार्यक्रम में सोनकच्छ विधानसभा क्षेत्र के विधायक राजेश सोनकर, गौसेवक जितेंद्र रघुवंशी और बड़ी संख्या में स्थानीयजन, समाजसेवी व पत्रकार साथी उपस्थित थे। सभी ने इस अनोखी मुहिम की सराहना की और अपने-अपने स्तर पर पर्यावरण की रक्षा के लिए काम करने का संकल्प लिया। आदेश लहरी की आर्ट फॉर अर्थ मुहिम से न केवल कला और पर्यावरण को एक नई दिशा मिल रही है, बल्कि यह हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी का अहसास भी करवा रही है।

.....शेष पृष्ठ एक का

लुधियाना इंटरैक्टिव सेशन में मिले 15,606 करोड़ के निवेश प्रस्ताव : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

आजाद हुआ, तब भारत दुनिया की 15वीं अर्थ-व्यवस्था हुआ करता था। इजरायल और जापान जैसे देश कहां से कहां पहुंच गए। वर्ष 2014 में भारत 11वें स्थान पर था और आज बदलते दौर में प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बन गया है और अब तीसरी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ने कोयम्बटूर, सूरत और अब लुधियाना में रोड-शो कर निवेशकों के साथ संवाद किया है। राज्य में संभाग स्तर पर रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव भी आयोजित की गईं। इसी साल फरवरी में भोपाल में हुई जीआईएस के माध्यम से मध्यप्रदेश को 30.77 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले थे। राज्य में इंडस्ट्री के विभिन्न सेक्टर्स के विकास के लिए अलग-अलग विषयों पर समिट आयोजित की जा रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश विभिन्न खनिज संपदाओं से संपन्न क्षेत्र है। यहां निवेश करना निःसंदेह फायदे का सौदा है।

श्रमिकों के हित में बड़े स्तर पर सेटलमेंट किये क्लियर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हाल ही में प्रदेश सरकार ने श्रमिकों के हित में सैकड़ों करोड़ रुपये के सेटलमेंट क्लियर किये हैं। यह निर्णय प्रदेश सरकार की श्रमिकों के प्रति संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि यदि किसी नीति में निवेशकों को सुविधा देने के लिए संशोधन की आवश्यकता होगी तो सरकार कैबिनेट स्तर पर भी बदलाव करने के लिए तत्पर है।

आज सोने-चांदी के दाम में गिरावट

सोना 284 रू. कम होकर 96,737 रू. प्रति 10 ग्राम पर आया, चांदी 1.07 लाख रू. किलो

नई दिल्ली। सोने-चांदी के दाम में आज यानी 7 जुलाई को गिरावट है। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन के अनुसार 24 कैरेट सोने का दाम 284 कम होकर ?96,737 प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। इससे पहले इसका दाम 97,021 पर था। वहीं चांदी की कीमत 556 कम होकर 1,07,024 प्रति किलोग्राम हो गई है। इससे पहले ये 1,07,580 पर थी। वहीं 18 जून को चांदी ने 1,09,550 और सोने ने 99,454 का ऑल टाइम हाई बनाया था।

इस साल अब तक 20,575रू. महंगा हुआ

सोना इस साल यानी 1 जनवरी से अब तक 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 76,162 रुपए से 20,575 रुपए बढ़कर 96,737 रुपए पर पहुंच गया है। वहीं, चांदी का भाव भी 86,017 रुपए प्रति किलो से 21,507 रुपए बढ़कर 1,07,024 रुपए पर पहुंच गया है। वहीं पिछले साल यानी 2024 में सोना 12,810 रुपए महंगा हुआ था।

भोपाल सहित 4 महानगरों में 10 ग्राम सोने की कीमत

दिल्ली- 24 कैरेट सोने की कीमत 98,440 रू. और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,250रू.
मुंबई- 24 कैरेट सोने की कीमत 98,290 रू. और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,100रू.
कोलकाता- 24 कैरेट सोने की कीमत 98,290रू. और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,100रू.
चेन्नई- 24 कैरेट सोने की कीमत 98,290रू. और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,100रू.
भोपाल- 24 कैरेट सोने की कीमत 98,340रू. और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,150रू.

हृदय विदारक घटना: अनूपपुर अमरकंटक मार्ग में सजहा नाले में बही कार, पति-पत्नी सहित दो मासूम बच्चों की मौत

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। 06 जुलाई को जिला मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर अमरकंटक रोड पर सजहा नाले में एक कार रात में बह गई। कार में पति-पत्नी और दो बच्चे सवार थे। जिसे एसईसीएल कर्मी 38 वर्षीय चंद्रशेखर यादव चला रहें थे। कार में पत्नी 37 वर्षीय प्रीति यादव, 8 वर्षीय बेटा रेयांश और बेटी 2 वर्षीय सीबी की मौत हो गई। पुलिस ने सोमवार को चारों के शव बरामद कर लिए हैं।

अनूपपुर निवासी चंद्रशेखर यादव अपनी पत्नी प्रीति और दो बच्चों के साथ रविवार को अमरकंटक गए थे। प्रीति यादव जिला चिकित्सालय में नर्स के पद पर कार्यरत थीं। प्रीति का शव रविवार को घटनास्थल से 5 किमी दूर मिला था। जबकि पति और दो बच्चों के शव सोमवार को 9 किमी के दायरे में मिले। जानकारी अनुसार सोमवार की समय सीमा बैठक में कलेक्टर हर्षल पंचोली ने घटना नारजगी व्यक्ता करते हुए ग्राम औढ़ेरा के पटवारी संजीव सिंह,पंचायत सचिव कल्याण सिंह एवं रोजगार सहायक पर कार्यवाही करने के निर्देश सीईओ जिला पंचायत को दिये हैं।

जानकारी अनुसार चंद्रशेखर यादव मूल रूप से बाबा कालोनी बदरा के रहने वाले थे। वह सोहागपुर एसईसीएल में फोरमैन के पद पर कार्य करते थे। रविवार छुट्टी का दिन था, इसलिए परिवार के साथ अमरकंटक घूमने गए थे। हादसा रात करीब 7 बजे हुआ। वापसी के दौरान जब सजहा पुल पर पानी का बहाव तेज था। दोनों तरफ कई वाहन रुके थे। लोगों ने चंद्रशेखर को भी पुल पार न करने की सलाह दी, लेकिन एक बस के पुल पार करने के बाद चंद्रशेखर ने भी हिम्मत कर कार आगे बढ़ाई। इसी दौरान पुल का एक हिस्सा टूट गया और तेज बहाव में कार बह गई। पुलिस ने सोमवार दोपहर चंद्रशेखर और उनके दो बच्चों का शव बरामद किया। ज्ञात हो कि रविवार देर रात पत्नी प्रीति का शव मिल चुका था। ज्ञात हो कि जिले में तीन दिनों से भारी बरसात के कारण नदी लाने ऊफान पर हैं।

पुल पार करने से लोगों ने किया था मना

प्रत्यक्षदर्शी जसमत सिंह बंजारा ने बताया कि पुलिया में पानी ज्यादा होने के कारण पहले एक कार आई, जिसे आसपास के लोगों ने निकाल लिया था। उसके थोड़ी देर बाद एक बस निकली। बस के पीछे ही चंद्रशेखर यादव कार सवार अपने परिवार के साथ तेज बहाव में पुलिया पार करने लगे। पास ही स्थित वेयरहाउस के कर्मचारी उन्हें पुलिया पार करने के लिए बार-बार मना कर रहे थे।

पौधे फंसने की वजह से पानी सड़क पर आया

जसमत सिंह बंजारा ने बताया कि शाम करीब 6 बजे पुलिया में पानी ऊपर तक आ गया था। पुलिया में पेड़-पौधे फंसने की वजह से पानी सड़क पर आया। पानी का बहाव इतना तेज था कि हमें घर से सामान निकालने का मौका नहीं मिला। घर का दरवाजा लगाकर पास ही स्थित एक पक्के मकान की छत पर चढ़ गए। इसी दौरान हमने ये हादसा देखा।

जानकारी के अनुसार चंद्रशेखर यादव की माता-पिता का पहले ही देहांत हो चुका था। चंद्रशेखर यादव अपनी परिवार के साथ अनूपपुर में रहता थे। इस दुर्घटना में पूरा पारिवार खत्म हो गया। पत्नी प्रीति यादव की माता-पिता का रो-रो कर बुरा हाल हैं। वह अपने बेटी और दामाद,बच्चों का शव देखने के लिए जिला चिकित्सालय अनूपपुर पहुंचे।

सभी अधिकारी तत्परता एवं गंभीरता से वर्षा जनित आपदाओं से निपटने की करें तैयारी: कलेक्टर

-एसडीएम, तहसीलदार एवं निर्माण विभागों से जुड़े अधिकारी रहें अलर्ट मोड पर

अनूपपुर। कलेक्टर हर्षल पंचोली ने अनूपपुर जिले में वर्तमान वर्षाकाल को दृष्टिगत रखते हुए संभावित आपदा की स्थिति से निपटने हेतु अधिकारियों को सतर्क और सक्रिय रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि जिले के सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, तहसीलदार तथा निर्माण कार्यों से जुड़े अधिकारी पूरी तत्परता और सजगता के साथ कार्य करें। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि विशेषकर जिले की पुल-पुलिया, रपटा और नदी-नालों की निगरानी की जाए तथा जल बहाव वाले स्थलों को चिन्हित कर दोनों ओर सुरक्षा के समुचित उपाय किए जाएं। कलेक्टर ने कहा कि इस कार्य में पटवारी, सचिव एवं रोजगार सहायक की भी महत्वपूर्ण भूमिका है, अतः आवश्यकतानुसार उनकी ड्यूटी लगाई जाए। उन्होंने आपदा संभावित क्षेत्रों में पूर्व तैयारी सुनिश्चित करने, राहत सामग्री व संसाधनों की उपलब्धता बनाए रखने और किसी भी आपात स्थिति से शीघ्र निपटने हेतु सतर्क रहने के निर्देश दिए। कलेक्टर हर्षल पंचोली आज कलेक्ट्रेट कार्यालय के नर्मदा सभागार में आयोजित समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देशित कर रहे थे।

कलेक्टर ने प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना, लोक निर्माण विभाग, मध्यप्रदेश रोड डेवलपमेंट कार्पोरेशन, जल संसाधन विभाग सहित अन्य निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे वर्षा ऋतु के दृष्टिगत सतर्कता बरतें एवं अपने-अपने विभागों द्वारा निर्मित पुल-पुलिया, रपटे एवं जल संरचनाओं का तत्काल निरीक्षण कर लें। कलेक्टर ने कहा कि विगत दिनों हुई वर्षा के कारण यदि कहीं कोई संरचना क्षतिग्रस्त हुई है तो उसकी शीघ्र मरम्मत कराना सुनिश्चित करें। संबंधित निर्माण एजेंसियां अलर्ट मोड पर कार्य करें, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना अथवा जनहानि की स्थिति निर्मित न हो। उन्होंने निर्देशित किया कि संभावित आपदा की रोकथाम हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूर्व से सुनिश्चित कर ली जाएं।

कलेक्टर श्री पंचोली ने वर्षा जनित आपदाओं के संबंध में अधिकारियों को निर्देशित किया कि मुआवजा प्रकरणों में त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रभावित व्यक्ति को मुआवजा राशि तत्काल प्रदाय की जाए। उन्होंने अधीक्षक भू-अभिलेख को निर्देशित किया कि गूगल ड्राइव के माध्यम से ग्रामवार आकाशीय बिजली, मकान क्षति, पुल-पुलिया क्षति, हाथी जनित हानि, सर्पदंश आदि के प्रकरणों की जानकारी संबंधित पटवारियों से प्राप्त कर शीघ्र प्रतिवेदन तैयार कराएं। उक्त प्रतिवेदनों के आधार पर त्वरित राहत सहायता राशि का भुगतान सुनिश्चित किया जाए, ताकि प्रभावित परिवारों को समय पर सहायता प्राप्त हो सके।

कलेक्टर ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को निर्देशित किया कि जिले की समस्त ग्राम पंचायतों में वर्षा जनित आपदाओं से संभावित प्रभावित ग्रामीणों के लिए अस्थायी आश्रय स्थल (शेल्टर होम) की स्थापना सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि आपदा की स्थिति में इन शेल्टर होम्स के माध्यम से आवश्यकतानुसार प्रभावितों को त्वरित राहत प्रदान की जाए। साथ ही, उन्होंने खाद्य विभाग को निर्देशित किया कि शेल्टर होम्स में निवासरत व्यक्तियों को समुचित राशन सामग्री तत्काल उपलब्ध कराई जाए, जिससे आपदा की घड़ी में किसी भी प्रकार की असुविधा उत्पन्न न हो।

बैठक के दौरान विभिन्न विभागीय योजनाओं एवं गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा करते हुए स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविरों, आधार से समग्र आईडी ई-केवाईसी कैंप, जनजातीय कार्य विभाग द्वारा संचालित ऑनलाइन कोचिंग कक्षाओं, प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 की प्रगति एवं जिओ टैगिंग कार्य की स्थिति के संबंध में संबंधित अधिकारियों से विस्तृत जानकारी प्राप्त की। साथ ही महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा टीएचआर वितरण तथा पोषण ट्रैकर एप पर दर्ज पोषण स्थिति की समीक्षा करते हुए उन्होंने विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। कलेक्टर ने सभी योजनाओं के क्रियान्वयन में गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत तन्मय वशिष्ठ शर्मा, अपर कलेक्टर दिलीप कुमार पाण्डेय, संयुक्त कलेक्टर अंजली द्विवेदी, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पुष्पराजगढ़ सुधाकर सिंह बघेल, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कोतमा अजीत तिर्की सहित जिले के विभिन्न विभागों के विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

टेलीविज़न सुपरस्टार सुम्बुल तौकीर खान निभाएँगी सोनी सब के आगामी शो 'इत्ती सी खुशी' में मुख्य भूमिका

मुंबई। उम्र के हर पड़ाव के दर्शकों को जोड़ने वाली और दिल को छू लेने वाली कहानियों के लिए मशहूर चैनल सोनी सब अब अपना नया पारिवारिक ड्रामा 'इत्ती सी खुशी' लेकर आ रहा है। इस शो में प्रमुख भूमिका में नजर आएँगी बेहद प्रतिभाशाली अभिनेत्री सुम्बुल तौकीर खान। सुम्बुल अपने प्रभावशाली स्क्रीन प्रेज़ेंस और भावनात्मक गहराई के लिए जानी जाती हैं, और अब वह अन्विता दिवेकर का किरदार निभाने जा रही हैं। यह एक ऐसा किरदार है, जो दर्शकों के दिलों को छू जाएगा।

मुंबई की चहल-पहल भरी पृष्ठभूमि में रची गई यह कहानी 21 वर्षीय अन्विता की है, जो छह भाई-बहनों में सबसे बड़ी है और अपने बिखरते परिवार की अनचाही लेकिन मजबूत आधारशिला बन जाती है। एक ओर उसका पिता शराब की लत से जूझ रहा है, तो दूसरी ओर माँ उन्हें पहले ही छोड़ चुकी है। ऐसे में, अन्विता अपने सपनों और पढ़ाई की कुर्बानी देकर अपने भाई-बहनों के लिए बेहतर भविष्य गढ़ने में लग जाती है। यह शो रोजमर्रा के संघर्ष, अनकहे बलिदानों और बिना शोर के जीतने वाले प्रेम और साहस की कहानी को बेहद सच्चाई और कोमलता से दर्शाता है।

अन्विता के किरदार के बारे में बात करते हुए सुम्बुल तौकीर खान ने कहा, 'मैं 'इत्ती सी खुशी' का हिस्सा बनकर बेहद उत्साहित हूँ और अन्विता की कहानी को जीवन देने का मौका पाकर खुद को सौभाग्यशाली मानती हूँ। अन्विता दिवेकर कोई सामान्य टेलीविजन किरदार नहीं है, बल्कि वह मुंबई की एक सच्ची लड़की है। वह शांत लेकिन अडिग, करुणा से भरी लेकिन प्रखर है। वह अपने पाँच साल छोटे भाई-बहनों के लिए माँ बन चुकी है, और उसका प्रेम और जिम्मेदारी का गहरा भाव ही उसकी प्रेरणा है। अन्विता जमीन से जुड़ी, सच्ची और बेहद जुड़ाव पैदा करने वाली है। वह इस कहानी की भावनात्मक आत्मा है। वह एक खामोश योद्धा है, जो त्याग, खुलकर जीवन जीने की प्रेरणा और बिना शर्त प्रेम की मिसाल है।'

तैयार हो जाइए अन्विता से मिलने और उसकी दुनिया का हिस्सा बनने के लिए 'इत्ती सी खुशी' शो में, जो जल्द ही आ रहा है सिर्फ सोनी सब पर।

वैकल्पिक चिकित्सक संघ की प्रदेश स्तरीय मासिक बैठक सफलतापूर्वक सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। वैकल्पिक चिकित्सक संघ बैठक में प्रदेश भर से बड़ी संख्या में चिकित्सकों ने सहभागिता की। बैठक का उद्देश्य संगठन की उपलब्धियों की समीक्षा, कानूनी व प्रशासनिक स्थिति पर चर्चा एवं भावी रणनीति का निर्धारण रहा।

बैठक को संबोधित करते हुए संघ के प्रदेश महामंत्री सम्माननीय डॉ. दीपक परसैया ने विगत वर्षों में संगठन द्वारा किए गए कार्यों और उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि वैकल्पिक चिकित्सक संघ ही ऐसा एकमात्र संगठन है, जिसके संरक्षण में प्रदेश के वैकल्पिक चिकित्सक आत्मविश्वास और निर्भीकता से कार्यरत हैं। संगठन चिकित्सा क्षेत्र में हो रही सभी गतिविधियों पर सतर्क दृष्टि रखता है, तथा चिकित्सकों के हितों की रक्षा हेतु हर स्तर पर संघर्षरत है।

प्रदेश महामंत्री ने ये भी स्पष्ट किया कि संगठन किसी अन्य संस्था या संगठन के प्रति द्वेष की भावना नहीं रखता और न ही अनावश्यक आलोचना में विश्वास करता है। हमारा एकमात्र ध्येय वैकल्पिक चिकित्सा की गरिमा को बनाए रखना एवं चिकित्सकों को उनके समुचित अधिकार और सम्मान दिलाना है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि संगठन या उसके चिकित्सकों के विरुद्ध भविष्य में कोई भी अभद्र टिप्पणी या अवांछित गतिविधि होती है, तो संघ कानूनी मार्ग अपनाने से पीछे नहीं हटेगा।

प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अभिमन्यु सिंह ने अपने संबोधन में बेसिक मेडिकल प्रैक्टिशनर की वर्तमान कानूनी स्थिति, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए उपस्थित चिकित्सकों को अवगत कराया कि वर्तमान में हमारी जो याचिका मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में लंबित है उस पर संगठन लगातार निगरानी रखे हुए है। और संगठन आपको आश्वस्त करता है कि पूर्व की भांति ही माननीय न्यायालय हमें इस बार भी निराश नहीं करेगा। रही बात उन लोगों की जो बार बार BMP केस की अपडेट मांगते हैं उनको स्पष्ट रूप से बता देना चाहते हैं कि जिसको भी अपडेट चाहिए वह संगठन की मीटिंग में उपस्थित होकर ले सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि संगठन का उद्देश्य केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाना नहीं है, बल्कि हर उस प्रणाली को वैधानिक सम्मान दिलाना है, जो जनस्वास्थ्य में योगदान देती है। उन्होंने राजस्थान में अधूरी मान्यता के उदाहरण का हवाला देते हुए यह दोहराया कि मध्यप्रदेश में जब भी कोई पहल हो, तो वह पूर्ण अधिकार की होनी चाहिए जिसमें चिकित्सकों को 'डॉक्टर' लिखने का अधिकार, पंजीयन, और स्वतंत्र प्रैक्टिस की अनुमति सम्मिलित हो। प्रदेश अध्यक्ष ने अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित 'बेसिक हेल्थ केयर' और 'पी.जी. डिप्लोमा इन बेसिक हेल्थ केयर' पाठ्यक्रमों के संदर्भ में बताया कि 1 जुलाई के बाद पैरा-मेडिकल की परिभाषा में परिवर्तन हुआ है और अब यह कोर्स 'एलाइड हेल्थ केयर' की श्रेणी में आ गया है। संगठन का लक्ष्य है कि इन पाठ्यक्रमों को 'एलाइड हेल्थ प्रोफेशनल' के रूप में मान्यता मिले, पंजीकरण प्राप्त हो, और प्रशिक्षुओं को स्वतंत्र रूप से कार्य करने की अनुमति मिले। संगठन की प्रदेश कार्यालय मंत्री डॉ. नीलम विश्वकर्मा ने बैठक में उपस्थित चिकित्सकों को आइडेंटिटी कार्ड, सदस्यता कार्ड एवं अन्य दस्तावेजों का वितरण किया। साथ ही काउंसिल ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथी सिस्टम ऑफ मेडिसिन द्वारा दस्तावेजों की मांग के संबंध में भी जानकारी दी गई। प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अभिमन्यु सिंह ने इस विषय पर कहा कि काउंसिल द्वारा दस्तावेज एकत्र करने का उद्देश्य और प्रक्रिया स्पष्ट नहीं की गई है, जिससे चिकित्सकों के मन में भ्रम और असुरक्षा की भावना है। उन्होंने यह मांग की कि जब तक काउंसिल यह सुनिश्चित नहीं करती कि उक्त दस्तावेजों का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग नहीं होगा, न ही किसी अन्य संस्था या एजेंसी के साथ साझा किया जाएगा, तब तक संगठन इस पर आपत्ति जताता रहेगा। उन्होंने बताया कि इस संबंध में एक पत्र भी काउंसिल को प्रेषित किया जा चुका है, जिसमें दस्तावेजों की पारदर्शिता एवं गोपनीयता की गारंटी की मांग की गई है। आज की बैठक सकारात्मक वातावरण में सम्पन्न हुई, जिसमें संगठन की प्रतिबद्धता, पारदर्शिता एवं वैकल्पिक चिकित्सकों के हितों की रक्षा हेतु की जा रही सक्रियता का स्पष्ट परिचय मिला। संगठन शीघ्र ही आगामी योजनाओं की रूपरेखा सार्वजनिक करेगा और चिकित्सकों को उनके पूर्ण अधिकार दिलाने हेतु सभी स्तरों पर प्रयास जारी रखेगा।

अब बीमा प्लान देगा तुरंत आमदनी और सौ साल तक की सुरक्षा

बंधन लाइफ ने लॉन्च किया ''आईइन्कम वेल्थ'', महिलाओं को मिलेगा 1.5 प्रतिशत अतिरिक्त लाभ

जब परिवार की जिम्मेदारी कंधों पर हो, तब आमदनी का भरोसेमंद ज़रिया और भविष्य की सुरक्षा, दोनों साथ चाहिए। लेकिन, अक्सर बीमा प्लान सिर्फ दूर की योजनाओं तक ही सीमित लगते हैं। ऐसे में, बंधन लाइफ इंश्योरेंस का नया प्लान ''आईइन्कम वेल्थ'' राहत की साँस जैसा है, जो पॉलिसी लेने के महज़ 7 दिन के भीतर आमदनी देना शुरू कर देता है, वह भी 100 साल तक के लाइफ कवर के साथ। बंधन लाइफ के एमडी और सीईओ सतीश्वर बी. ने कहा, 'हम चाहते हैं कि लोग सिर्फ भविष्य की चिंता न करें, बल्कि आज भी आत्मनिर्भर महसूस करें। यह प्लान उन्हीं लोगों के लिए है, जो सुरक्षा और आमदनी, दोनों एक साथ चाहते हैं।' यह प्लान उन परिवारों के लिए खास है, जो मासिक खर्चों में राहत चाहते हैं और साथ ही जीवन भर की सुरक्षा भी। इसमें हर साल गारंटीड इनकम मिलती है और साथ में संभावित कैश बोनस भी। यदि पॉलिसीधारक को कुछ हो जाए, तो ''सिक्योर पॉलिसी बेनिफिट'' के तहत परिवार को एकमुश्त रकम मिलती है और आगे प्रीमियम दिए बिना सभी फायदे जारी रहते हैं। खास बात यह है कि परिवार को कम से कम 105 प्रतिशत प्रीमियम वापस मिलते हैं। महिलाओं को इसमें 1.5 प्रतिशत अतिरिक्त आय मिलती है, जिससे वे खुद को और अपने परिवार को आर्थिक रूप से और मजबूत बना सकें। और तो और, सिर्फ 3 महीने की उम्र से ये पॉलिसी ली जा सकती है, यानि बच्चों के भविष्य के लिए बचत की शुरुआत भी जल्द की जा सकती है।

हरियाली महोत्सव के अंतर्गत पुलिस लाइन अनूपपुर में आयोजित हुआ वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम

अनूपपुर। पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार 01 जुलाई से 07 जुलाई तक हरियाली महोत्सव मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत आज अनूपपुर जिले के समस्त थाना चौकीयो में वृक्षारोपण एवं मुख्यालय स्तर पर पुलिस लाइन में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें पुलिस अधीक्षक मोती उर रहमान,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक इसरार मंसूरी सहित पुलिस लाइन,पुलिस अधीक्षक कार्यालय, यातायात,अजाक एवं महिला थाना में पदस्थ पुलिस अधिकारी कर्मचारियों ने भाग लिया । सभी के द्वारा पौधा रोपण किया गया। आज 200 से अधिक पौधों को रोपित कर उनके पालन पोषण एवं वृक्ष बनने तक उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया।

कवाई थर्मल पॉवर प्लांट के विस्तरण की जनसुनवाई सफलतापूर्वक सम्पन्न

- प्रस्तावित 3200 मेगावाट अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल थर्मल पॉवर प्लांट को लेकर ग्रामीणों ने दिखाई सक्रिय भागीदारी

- अटरू तहसील के कवाई गाँव में जनभागीदारी के साथ हुई खुली चर्चा

- पर्यावरणीय प्रभावों और विकास से जुड़े मुद्दों पर ग्रामीणों ने रखे सुझाव

- अदाणी पॉवर लिमिटेड द्वारा बारां जिले में की गई पहलों को ग्रामीणों ने सराहा

कवाई (अटरू)। बारां जिले के अटरू तहसील अंतर्गत ग्राम कवाई में प्रस्तावित 3200 (4×800) मेगावाट अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल थर्मल पॉवर प्लांट के विस्तार को लेकर सोमवार को जनसुनवाई का सफल आयोजन किया गया। यह जनसुनवाई पर्यावरणीय स्वीकृति हेतु भारत सरकार पर्यावरण मंत्रालय की अधिसूचना क्रमांक 1533 दिनाँक 14 सितंबर, 2006 एवं उसके बाद के संशोधनों के प्रावधानों के अंतर्गत आयोजित की गई। इस परियोजना में पहले से संचालित 1320 (2×660) मेगावाट संयंत्र में क्षमता वृद्धि की जाएगी, जिसे चरण-II के तहत मेसर्स अदाणी पॉवर लिमिटेड द्वारा प्रस्तावित किया गया है। इस जनसुनवाई का आयोजन राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, झालावाड़ के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना दिनांक 14 सितंबर, 2006 एवं बाद के संशोधनों के प्रावधानों के अनुसार किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उपखंड मजिस्ट्रेट, अटरू ओमप्रकाश चंदेलिया ने की, जिन्हें जिला कलेक्टर बारां श्री रोहिताश्व सिंह तोमर द्वारा अधिकृत किया गया था। इस अवसर पर राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के क्षेत्रीय अधिकारी अनुराग यादव सहित परियोजना से जुड़े अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। जनसुनवाई में बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीणों, जनप्रतिनिधियों और संबंधित अधिकारियों ने भाग लेकर परियोजना से संबंधित विषयों पर विचार साझा किए। साथ ही, नई पर्यावरणीय तकनीकों को अपनाने और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में किए जा रहे प्रयास भी कार्यक्रम में महत्वपूर्ण आकर्षण रहे।

जनसुनवाई में पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई। ग्रामीणों ने रोजगार, जल, वायु और हरियाली से जुड़े सवाल पूछे और परियोजना से संभावित सामाजिक व आर्थिक लाभों पर सुझाव रखे। साथ ही उन्होंने यह भी अपेक्षा जताई कि कंपनी द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका से जुड़े क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जाए।

अदाणी पॉवर लिमिटेड द्वारा बारां जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और आजीविका के क्षेत्र में कई सार्थक पहलें की गई हैं, जिनकी ग्रामीणों ने खुलकर सराहना की। ''हरित पर्यावरण कार्यक्रम'' के तहत 15 सरकारी व आवासीय विद्यालयों में सोलर पैनल लगाए गए हैं, जिससे 4500 से अधिक विद्यार्थियों को लगातार बिजली और बेहतर शिक्षा की सुविधा मिल रही है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा के क्षेत्र को बढ़ावा देते हुए, नवोदय कोचिंग क्लासेस की शुरुआत की गई। वहीं, स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए 12 जिला अस्पताल और 24 घंटे एम्बुलेंस सेवाएँ शुरू की गईं। दूध डेयरी की स्थापना से ग्रामीणों को रोज़गार के नए अवसर मिले हैं। साथ ही, अदाणी फाउंडेशन द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अमापुर गाँव में महिला-संचालित डेयरी कारोबार से 500 से ज्यादा महिलाएँ जुड़ी हुई हैं। यहाँ दूध संग्रह केंद्रों की स्थापना से ग्रामीण परिवारों को स्थायी आमदनी हो रही है। वहीं, पर्यावरण संरक्षण के लिए जिले में पौधारोपण किया गया है।

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिलीप जायसवाल पहुंचे जिला चिकित्सालय, मृतकों को दी श्रद्धांजलि

परिवार को दी सांत्वना, मृतकों को 25-25 हजार की आर्थिक सहायता की घोषणा

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। जिले में एक अत्यंत दुखद घटना घटित हुई। जिला मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर अमरकंटक रोड पर सजहा नाले में कार के बह जाने से एसईसीएल कर्मी चंद्रशेखर यादव एवं उनकी पत्नी जो जिला चिकित्सालय में स्टाफ नर्स थी प्रीति यादव और दो मासूम बच्चों का असमय निधन हो गया।

हृदय विदारक घटना पर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने भी मृतकों के प्रति अपनी गहन शोक संवेदनाएं व्यक्त की है। यह हृदय विदारक दुर्घटना पूरे जिले को शोकाकुल कर गई है।

घटना की जानकारी मिलते ही राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कुटीर एवं ग्रामोद्योग दिलीप जायसवाल जिला चिकित्सालय पहुंच कर दिवंगतजनों के परिजनों से भेंट कर उन्हें सांत्वना दी एवं शोक संवेदनाएं व्यक्ति की।

मंत्री श्री जायसवाल ने इस दुःख की घड़ी में शासन की ओर से तत्काल सहायता के रूप में प्रत्येक दिवंगत के परिजनों को 25-25 हज़ार रूपये की आर्थिक सहायता राशि प्रदान की घोषणा की है। मंत्री श्री जायसवाल ने ईश्वर से दिवंगत आत्माओं को शांति एवं परिजनों को यह असहनीय पीड़ा सहन करने की शक्ति दें यह प्रार्थना की है।

मंत्री दिलीप जायसवाल ने आम जनता से क्या आवाह्न

कि जब नदी, नाले में बरसात के चलते पानी पुल के ऊपर से बह रहा हो तो ऐसे में अपनी जान जोखिम डालकर नदी, पुल, रपटा पार ना करें, वरना आपकी जान को खतरा हो सकता है। मंत्री श्री जायसवाल ने कहा पुलिस, प्रशासन, एसडीआरएफ अन्य प्रशासन के लोग जो सारी रात सर्चिंग कर लाश को बरामद करने में अपनी सेवाएं दी है मैं उन सब के प्रति भी बहुत-बहुत आभार व्यापित करता हूं।

सभी बूथ लेवल अधिकारी प्रशिक्षण को गंभीरता से ग्रहण करें: सी.बी. प्रसाद

जिले की 06 विधानसभाओं के लिए बीएलओ का प्रशिक्षण प्रारंभ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 07 जुलाई से 13 जुलाई तक बूथ लेवल अधिकारियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसमें मुरैना जिले की 06 विधानसभाओं के लिए यह प्रशिक्षण अम्बाह, सबलगढ़, जौरा के अलावा सुमावली, मुरैना और दिमनी का प्रशिक्षण पॉलीटेक्निक कॉलेज में दिया जा रहा है। प्रशिक्षण को सभी बीएलओ गंभीरता के साथ ग्रहण करें, ताकि आने वाले समय में किसी प्रकार की त्रुटि न हो सके। यह बात उप जिला निर्वाचन अधिकारी सीबी प्रसाद ने पॉलीटेक्निक कॉलेज में प्रशिक्षण के दौरान बीएलओ से कही। इस अवसर पर सुपरवाइजर और बीएलओ उपस्थित थे।

सुमावली, मुरैना और दिमनी विधानसभा क्षेत्र के लिए मास्टर ट्रेनर्स द्वारा पॉलीटेक्निक कॉलेज में प्रशिक्षण के दौरान बताया कि बीएलओ किसी भी कार्य में जानबूझकर गलती न करें, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 32 के तहत जानबूझकर गलती करने की सजा है। जिसमें जुर्माना सहित कम से कम तीन माह का कारावास जिसे दो साल तक की अवधि के लिए बढ़ाया जा सकता है और जुर्माने से भी दंडित होगा। मास्टर ट्रेनर्स ने बताया कि बीएलओ, ईआरओ, एईआरओ के नियंत्रण और पर्यवेक्षण के तहत उसे आवंटित भाग/मतदान केन्द्र की निर्वाचक नामावली को अद्यतन या अपडेट करना रहेगा। निर्वाचक नामावली में बताये गये क्षेत्र/भाग का बीएलओ भ्रमण करेगा, यह सुनिश्चित करेगा कि उसे जो निर्वाचक नामावली मिली है, वह प्रचलित निर्वाचक नामावली है। निर्वाचक नामावली से संबंधित क्षेत्र, भाग में आवंटित सेक्सशन, मोहल्लों और आवंटित निर्वाचकों की जानकारी है। कोई भी पात्र नागरिक मतदाता, निर्वाचक नामावली में शामिल होने से वंचित न रहे और निर्वाचक नामावली में गलत व अपात्र लोगों के नाम शामिल न रहें। मतदाता की आयु 18 वर्ष है।

मास्टर ट्रेनर्स ने बताया कि भारत का संविधान अनुच्छेद 326, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 16,19 तथा 20 निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1960 का नियम 5,6 एवं 7 रहेगा। बीएलओ प्रत्येक घर का दौरा करेंगे और प्रत्येक विद्यमान मतदाता को गणना फॉर्म की दो प्रतियां वितरित कर फार्म भरने में मतदाता का मार्गदर्शन करेंगे। दौरे के समय दि कोई घर बंद या ताला लगा हुआ मिलता है तो बीएलओ गणना फॉर्म को घर के दरवाजे से अंदर डाल देगा। ऐसी स्थितियों में बीएलओ को कम से कम तीन बार दौरा कर भरे हुए फॉर्म प्राप्त करने होंगे। बीएलओ मतदाताओं एवं जनसामान्य को यह भी सूचित करेंगे कि मतदाता ऑनलाइन मोड बेवसाइट से भी गणना फॉर्म डाउनलोड कर सकते हैं। भरे हुए फार्म आवश्यक स्व सत्यापित दस्तावेजों सहित अपलोड कर सकते हैं।

इसी प्रकार प्रशिक्षण सबलगढ़ में नेहरू डिग्री कॉलेज सबलगढ़, जौरा में शासकीय महाविद्यालय जौरा और अम्बाह में पीजी कॉलेज अम्बाह में दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण सभी विधानसभाओं के 50-50 बीएलओ को दिया जा रहा है। इसी प्रकार 13 जुलाई तक यह प्रशिक्षण दिये जायेंगे।

जिले में अब तक 346.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मुरैना जिले में 01 जून से 07 जुलाई, 2025 तक 346.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है, जो गत वर्ष की तुलना में 161.7 मिलीमीटर वर्षा अधिक है। पिछले वर्ष इसी अवधि में 184.9 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज हुई थी।

अधीक्षक भू-अभिलेख मुरैना ने बताया कि जिले में 01 जून से 07 जुलाई तक सर्वाधिक वर्षा मुरैना में 487 मिलीमीटर दर्ज की गई है। पोरसा में 404, सबलगढ़ में 376, जौरा में 311, कैलारस में 261 और अम्बाह तहसील में सबसे कम 240.4 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है।

07 जुलाई, सोमवार को सर्वाधिक 82 मिलीमीटर वर्षा सबलगढ़ में दर्ज की गई है। जौरा में 54, कैलारस में 29 और मुरैना में 4 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। जबकि अम्बाह-पोरसा में वर्षा निरंक बताई गई है।

पथराव व उपद्रव में शामिल चार आरोपियों को पुलिस ने दबोचा

कुशवाह समाज के प्रदर्शन के दौरान हुई थी घटना

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। विगत 3 जुलाई को कुशवाह समाज के प्रदर्शन के दौरान उपद्रव करते हुए पुलिस टीम पर पथराव कर हमला किए जाने के मामले में सिविल लाईन पुलिस ने सोमवार को 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। इन चारों आरोपियों को न्यायालय ने 11 जुलाई तक पुलिस रिमांड पर भेज दिया है।

बताना होगा कि 3 जुलाई को कुशवाह समाज के लोगों द्वारा नवीन कलेक्ट्रेट और रेस्ट हाऊस पर प्रदर्शन किया गया था। प्रदर्शन के दौरान ही भीड़ ने उपद्रव करते हुए बैरियर चौराहे पर चक्काजाम कर दिया। जब पुलिस ने उपद्रव को रोकने की कोशिश की तो भीड़ ने पुलिस पर पथराव कर डाला था। जिसमें 4 पुलिसकर्मी जख्मी भी हुए थे। उपद्रव, पथराव को लेकर सिविल लाईन थाना पुलिस ने पूर्व विधायक अजब सिंह कुशवाह सहित 86 नामजद सहित डेढ़ सैकड़ा लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज की थी। घटना के बाद से ही पुलिस उपद्रव, पथराव के वीडियो फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश भी कर रही थी। सोमवार को पुलिस ने उपद्रव में शामिल रहे शैलेन्द्र कुशवाह, योगेन्द्र कुशवाह नि. हथरिया सुमावली, पिंकी कुशवाह नि. पगारा रोड जौरा और राजपाल कुशवाह निवासी हिंगौनाकलां को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस आरोपियों को रेस्ट हाऊस स्थित घटनास्थल पर भी लेकर पहुंचीं, जहां घटना का रीक्रिएशन चल रहा था। सोमवार की शाम को पुलिस ने आरोपियों को कोर्ट में पेश किया। न्यायालय ने चारों आरोपियों को चार दिन की रिमांड पर 11 जुलाई तक पुलिस के सुपुर्द कर दिया है।

ससुराल जा रहे युवक की बाइक डंपर से टकराई

मुरैना। फतेहाबाद आगरा से ग्वालियर स्थित अपनी ससुराल जा रहे युवक की बाइक को डंपर ने टक्कर मार दी। जिससे युवक बुरी तरह जख्मी हो गया। उसे जिला अस्पताल में दाखिल कराया गया है। हादसा एनएच-44 हाईवे पर काका ढाबा के पास होना बताया जा रहा है।

मिली जानकारी के मुताबिक आगरा जिले के फतेहाबाद निवासी सत्यवीर वर्मा 38 पुत्र रामप्रकाश वर्मा सोमवार को अपने घर से ग्वालियर स्थित अपनी ससुराल जाने के लिए बाइक पर सवार होकर निकला था। इसी दौरान जब सत्यवीर एनएच-44 हाईवे पर अम्बाह बायपास चौराहे को क्रॉस करने के बाद ग्वालियर की ओर जा रहा था, तभी काका ढाबा के सामने एक डंपर ट्रक ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। जिससे सत्यवीर के सिर में चोट लगी और वह जख्मी हो गया। सत्यवीर को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

हरियाली महोत्सव के अन्तर्गत पुलिस लाइन में किया गया पौधारोपण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार जिला मुरैना में 01 से 07 जुलाई 2025 तक हरियाली महोत्सव के तारतम्य मे पौधारोपण सप्ताह का आयोजन किया गया। उक्त निर्देशों के परिपालन में पुलिस अधीक्षक मुरैना, समीर सौरभ (भापुसे) के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र पाल सिंह डावर के मार्गदर्शन में विभिन्न थाना परिसरों एवं कार्यालयों में वृक्षारोपण किया गया। उक्त अभियान के तहत सोमवार को पुलिस लाइन मुरैना स्थित आवासीय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पुलिस लाइन मुरैना में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक मुरैना समीर सौरभ (भापुसे) एवं अति. पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र पाल सिंह डावर द्वारा रक्षित निरीक्षक रविकांत शुक्ला एवं अन्य उपस्थित अधिकारी व कर्मचारियों के साथ वृक्षारोपण किया गया। उक्त वृक्षारोपण का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संतुलन बनाए रखना एवं अधिक से अधिक हरियाली को बढ़ावा देना है।

इस अवसर पर रक्षित निरीक्षक मुरैना रविकान्त शुक्ला, सूबेदार गजेन्द्र परिहार, सूबेदार हरेन्द्र राजपूत, पुलिस कर्मचारी एवं पुलिस परिवारों के सदस्य आदि उपस्थित रहे। वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 01.07.25 से आज दिनांक तक जिलेभर के विभिन्न थानों/कार्यालयों एवं पुलिस आवासीय परिसरों में लगभग 1000 पौधों का पौधारोपण किया गया है।

चूड़ी कारोबारी को हाईवे पर ट्रक ने टक्कर मारी

-बैरियर चौराहा क्षेत्र स्थित फ्लाईओवर पर हुआ हादसा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। फिरोजाबाद से चूड़ियां खरीदकर लौटे कारोबारी को एनएच-44 हाईवे पर अज्ञात ट्रक ने टक्कर मार दी। जिससे वह जख्मी हो गया। उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसा बैरियर चौराहा क्षेत्र में स्थित फ्लाईओवर पर होना बताया जा रहा है।

मिली जानकारी के मुताबिक शहर की संजय कॉलोनी में रहने वाला रशीद खान 65 पुत्र अब्दुल अजीज पेशे से चूड़ी कारोबारी है। सोमवार को रशीद फिरोजाबाद से चूड़ियां खरीदकर किसी चार पहिया वाहन में सवार होकर मुरैना पहुंचा। मुरैना में वाहन ने उसे बैरियर फ्लाईओवर पर उतार दिया। जब रशीद फ्लाईओवर से उतरकर शहर की ओर जा रहा था। तभी अज्ञात ट्रक ने उसे टक्कर मार दी। जिससे रशीद जख्मी हो गया। उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। खबर लिखे जाने तक पुलिस ने एफआईआर दर्ज नहीं की थी।

मान कषाय प्राणी मात्र को विवेक शून्य कर देती है: मुनिश्री विलोकसागर

विधान के छठवें दिन 256 अर्घ समर्पित होंगे

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। हम सभी श्री सिद्धचक्र विधान के अंतर्गत निरंतर सिद्धों की आराधना कर रहे हैं। विधान में पांचवे दिन हमने पूजन करते हुए जो अर्घ समर्पित किए हैं वो अपने अंदर बैठे मान कषायों को दूर करने के लिए किए हैं। जब हम भगवान की पूजन भक्ति करते हैं, तब हमारे अंदर मान कषाय नहीं होना चाहिए । मान कषाय से बचने के लिए ही भगवान की पूजा, अर्चना, आराधना, भक्ति की जाती है । मान कषाय ही हमें चार गति और चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता है और इस असार संसार से मुक्त नहीं होने देता, हमारे अंदर दिव्य शक्ति को जागृत नहीं होने देता, हमें परमात्मा नहीं बनने देता । इन मान कषायों के कारण ही हम दिन रात पाप कर्मों में लिप्त रहते हैं। यदि हमारे जीवन में मृदुता, सरलता आ जाए तो इस संसार में हमारा कोई शत्रु या दुश्मन नहीं होगा, हमारा किसी से बैर नहीं होगा । हम जब भी इष्ट की, जिनेंद्र प्रभु की आराधना, पूजा भक्ति करते हैं तब हमारा चिंतन होना चाहिए कि हे भगवन, जो दिव्य शक्ति आपके अंदर विराजमान है, वो मेरे अंदर भी प्रगट हो । हम निरंतर पूजा भक्ति आराधना करते हुए इष्ट की प्रतिमाओं को घिसते रहते हैं लेकिन अपने अंदर के मान कषाय को नहीं छोड़ते। हमें प्रभु कृपा से जो मिला वह पर्याप्त था लेकिन कषाय के कारण हमें संतुष्टि नहीं हुई । तन की भूख तो आसानी से बुझ जाती है लेकिन मन की भूख, कषाय की भूख नहीं बुझ सकती ।

रोजगार मेले का आयोजन आज

मुरैना। शासन के निर्देशानुसार मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत कमलेश कुमार भार्गव के निर्देशन में रोजगार मेले का आयोजन 8 जुलाई से 11 जुलाई तक अलग-अलग विकासखण्डों में निर्धारित किया गया है। यह रोजगार मेला प्रातः 10 से सायं 04 बजे तक आयोजित किये जायेंगे। जिनमें अम्बाह, पोरसा के लिए रोजगार मेला 8 जुलाई को सुबह 10 से सायं 04 बजे पुरानी तहसील चम्बल कॉलोनी पोरसा रोड़ अम्बाह में आयोजित होगा। अधिक जानकारी के लिए विकासखण्ड प्रबंधक दिवाकर शर्मा मोबाइल नंबर 7222901831 और तपन कुमार मोबाइल नंबर 8349901188 पर संपर्क किया जा सकता है।

उफन रहीं नदियां, पुलिया-रपटों पर पानी आने से रास्ते बंद

निर्माण के चलते रामपुरकलां-सैमई मार्ग पर कीचड़ से परेशानी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/रामपुरकलां। रामपुरकलां क्षेत्र से होकर गुजरने वाली नदियां इन दिनों उफन रहीं है। नदियों का जलस्तर बढ़ने से पानी रपटों एवं पुलियों के ऊपर से होकर बह रहा है। जिसकी वजह से दो दर्जन से अधिक गांवों के रास्ते अवरुद्ध हो गए है। इधर रामपुरकलां से कैलारस जाने के लिए सैमई से होकर जाने वाली सड़क पर निर्माण कार्य चल रहा है। जोरदार बारिश के दौरान आधी-अधूरी सड़क पूरी तरह से कीचड़ से भर गई है। जिसकी वजह से इस मार्ग से होकर जाने वाले वाहन चालकों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

पति-पत्नी को बेसुध करने के बाद घर से जेवरात-नगदी समेटे

-बानमोर क्षेत्र के नयागांव में रविवार की रात को हुई वारदात

-एक लाख नकदी सहित 20 तोला वजनी सोने के जेवरात चोरी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। घर के अंदर सो रहे पति-पत्नी को बदमाशों ने नशीला पदार्थ सुंघाकर बेसुध कर दिया। जिसके बाद बदमाश अलमारी और बक्सों में रखे 20 तोला वजनी सोने के जेवरातों सहित 1 लाख रूपये नकदी चुराकर ले गए। चोरी की वारदात बानमौर थाना क्षेत्र के नयागांव में रविवार-सोमवार की दरम्यानी रात को हुई।

मिली जानकारी के मुताबिक नयागांव निवासी सिरनाम सिंह राजपूत रविवार की रात को घर में अपने कमरे में सो रहे थे, सिरनाम की पत्नी रजनी राजपूत दूसरे कमरे में सो रही थी। देर रात को घर के मेनगेट के रास्ते बदमाश घर में घुसे। जिसके बाद बदमाशों ने कमरे में सो रही रजनी राजपूत को नशीला पदार्थ सुंघाया। रजनी के बेसुध होने के बाद बदमाशों ने उसे कंबल ओढ़ा दिया और कमरे की बाहर से कुंदी लगा दी। जिसके बाद बदमाश सिरनाम राजपूत के कमरे में पहुंचें, यहां भी बदमाशों ने सिरनाम को बेसुध कर कमरे की बाहर से कुंदी लगा दी। तड़के करीब 4 बजे जब सिरनाम की नींद खुली तो उसके कमरे की बाहर से कुंदी लगी मिली। खिड़की से हाथ डालकर सिरनाम से कुंदी खोली तो मेनगेट खुला हुआ मिला। सिरनाम ने दूसरे कमरे में बेसुध पड़ी पत्नी रजनी को जगाया। जब दोनों पति-पत्नी कमरे में पहुंचें तो वहां अलमारी खुली हुई मिली, सामान बिखरा हुआ था। अलमारी में रखे रजनी और सिरनाम की पुत्रवधु दीपा राजपूत के 20 तोला वजनी सोने के जेवरात सहित एक लाख रूपये नकदी गायब थे। तब सिरनाम ने मोबाइल फोन से कॉल कर बानमोर पुलिस को चोरी होने की सूचना दी। घटना की सूचना मिलने के बाद एसडीओपी अनिल कुमार, थाना प्रभारी अमित सिंह भदौरिया फोर्स के साथ मौके पर पहुंचें और घटनास्थल का जायजा लिया। पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है।

एसएएफ का जवान है सिरनाम का बड़ा पुत्र

नयागांव में चोरी की वारदात के पीड़ित सिरनाम सिंह का बड़ा पुत्र एसएएफ की 7वीं बटालियन में भोपाल में पदस्थ है। उसकी पत्नी दीपा राजपूत के जेवरात भी घर में रखे हुए थे। जिन्हें बदमाश चुराकर ले गए।

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सम्पत्ति स्वामी श्रीमती सोनू पत्नी श्री विनोद कुमार, दिनेश कुमार व विजय कुमार पुत्रगण आदिराम जाति बाथम निवासी गणेशपुरा तहसील व जिला मुरैना के स्वामित्व व आधिपत्य का एक भूखण्ड जो कि मौजा शिकारपुर के सर्वे क्रमांक 368 का अंशभाग होकर 20×45 यानि कुल क्षेत्रफल 900 वर्गफीट है। उक्त भूखण्ड में विक्रेता विजय बाथम 1/3 भाग का हिस्सेदार है वह अपने स्वभाग को विक्रय करने का अनुबंध मेरे व्यवहारी से हो गया है, उक्त संपत्ति का निकट भविष्य में विक्रय पत्र संपादित होना है। वर्णित संपत्ति के संबंध में यदि कोई व्यक्ति, शासकीय व अर्द्ध शासकीय संस्था या प्राइवेट बैंक अथवा वित्तीय संस्थान, पारिवारिक या कौटुम्बिक सदस्य आदि किसी भी प्रकार का कोई हित रखते हैं तो इस आम सूचना के प्रकाशन से 7 दिवस (सात दिवस) के अन्दर नीचे लिखे पते पर आपत्ति दर्ज करा सकता है। बाद गुजरने म्याद कोई भी आपत्ति मान्य एवं स्वीकार नहीं की जावेगी व मेरे व्यवहारी द्वारा विक्रय पत्र संपादित करा लिया जायेगा। सर्वसाधरण सूचित हों।

दिनांक 07.07.2025

द्वारा
अरविन्द कुमार पाठक (एडवोकेट)
निवासी- पाठक मार्केट, दतपुरा मुरैना (म.प्र.)
मो. 9039165136

कार्यालय तहसीलदार तहसील व जिला मुरैना म.प्र.

क्रमांक / / रीडर - 1/2025 /1498/ 07.07.2025
मुरैना, दिनांक- 28.06.2025

सम्पत्ति नीलामी आम सूचना

विषयः- बकायादार की संपत्ति की नीलामी के संबंध में।
संदर्भः- इस न्यायायलय का प्रकरण क्रमांक 0004/ अ-76/ 2024-25 शिकारपुर

उपरोक्त विषयान्तर्गत संदर्भित प्रकरण में लेख है कि कार्यालय कलेक्टर जिला मुरैना म.प्र. का पत्र क्रमांक/आर.एम./2024-25/160 मुरैना दिनांक 06.01.2025 एवं राजस्थान सरकार कार्यालय जिला कलेक्टर धौलपुर का पत्र क्रमांक प.9(4)(1)/डीआरए./21-22 /985 दिनांक 25.12.2024 एवं कार्यालय जिला आबकारी अधिकारी धौलपुर का पत्र क्रमांकः - आब/बकाया/2024-25/448 दिनांक 16.12.2024 से भारतीय राजस्व बसूली अधिनियम 1890 के अन्तर्गत बकाया राशि बसूली बाकीदार श्री हरिवीर सिंह पुत्र अजब सिंह निवासी बिजली घर के पास गणेशपुरा मुरैना तहसील व जिला मुरैना से राशि 67,99,292/- रूपये की बसूली कार्यवाही किये जाने हेतु पत्र प्राप्त हुआ है।

(बकायादार की संपत्ति का वर्णन)

मौजा शिकारपुर स्थित भूमि सर्वे क्रमांक 91 / 91 रकवा 0.0080 हे. एवं मौजा भौडेरी स्थित भूमि सर्वे क्रमांक 332 रकवा 0.38, 339 रकवा 0.03, 343 रकवा 0.12, 358 रकवा 0.23, 371 रकवा 0.04, 399 रकवा 0.20, 402 रकवा 0.10, 406 रकवा 0.05, 662 रकवा 0.20, 694 रकवा 0.55, 703 रकवा 0.35, 791 रकवा 0.45 आरे में से बकायदार के धारित स्वतः कृषि भूमि

तहसीलदार
तहसील मुरैना (म.प्र.)

आबकारी विभाग द्वारा 136 विभागीय एवं 92 आपराधिक प्रकरण दर्ज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। कलेक्टर अंकित अस्थाना के आदेशानुसार जिला आबकारी अधिकारी जितेन्द्र सिंह गुर्जर के मार्गदर्शन में माह जून 2025 में जिले में अवैध मदिरा आधिपत्य एवं परिवहन के कुल 92 प्रकरण दर्ज किये गये हैं।

जिला आबकारी अधिकारी श्री जितेन्द्र सिंह गुर्जर ने बताया कि मुरैना वृत्त में जितेन्द्र सोलंकी पुत्र दिनेश सोलंकी, निवासी-गणेशपुरा, मुरैना, अनुज इंदौलिया पुत्र रामेश्वर, निवासी-छोंदा, सोनू गुर्जर पुत्र अमर सिंह, निवासी-खेरा, भूपति गुर्जर पुत्र रामौतार, निवासी-गोठियापुरा, धरमवीर गुर्जर पुत्र मेवाराम, निवासी-जींगनी, गौरव शिवहरे पुत्र सुरेश, निवासी-बामौर, छोटेलाल गुर्जर पुत्र कप्तान, निवासी-खटानेकापुरा एवं धनीराम कुशवाह पुत्र कन्हैयालाल निवासी-करुआ, अम्बाह वृत्त में देवीराम उपाध्याय पुत्र राजेन्द्र, निवासी-खिल्ली, भूरे सिंह पुत्र प्रताप सिंह, निवासी खिल्ली. सत्यवीर राठौर पुत्र नारायण सिंह, निवासी-अम्बाह, शोभाराम पुत्र गिरवर, निवासी-चाँद का पुरा, भूपेन्द्र सिंह पुत्र विशम्भर सिंह, निवासी-लक्ष्मण का पुरा, मुकेश सखवार पुत्र देवीलाल, निवासी-बगिया पुरा, महेश सिंह तोमर पुत्र बुद्ध सिंह, निवासी- बुआ का पुरा एवं हरदेश सिंह पुत्र प्रमोद सिंह तथा लक्ष्मण सिंह पुत्र फूल सिंह, निवासी-सुनावली, सबलगढ़ वृत्त में रघुराज जाटव पुत्र जसवंत, बनवारी लाल पुत्र में चेऊराम, शेर सिंह धाकड़ पुत्र सखनलाल, अरविंद सिकरवार पुत्र कुलदीप सिंह, पंचम रावत पुत्र जनवेद, महेंश धाकड़ पुत्र गोपीराम, राजबहादुर पुत्र जसवंत सिंह एवं विवेक धाकड़ पुत्र नारायण तथा जौरा वृत्त संजय शर्मा पुत्र सुरेश शर्मा, निवासी-ग्राम चचिहा, बागचीनी, कमल किशोर जाटव पुत्र रामदास जाटव, निवासी-ग्राम सांकरा, टिंकू कुशवाहा पुत्र रामधन कुशवाहा, निवासी- तालपुरा, थाना बागचीनी, जौरा, माखन कुशवाहा पुत्र सोनेराम कुशवाहा, निवासी- फूलपुर जौरा, गजराज कुशवाहा पुत्र केदार कुशवाहा, निवासी-गेपरा फाटक, अनिल शाक्य पुत्र रामेश्वर शाक्य, निवासी-उरहेड़ी, आदि राम कुशवाहा पुत्र रामजीलाल कुशवाहा, निवासी-काशीपुर जौरा एवं रंजीत जादौन पुत्र सिमरजीत जड़ों, निवासी-गोपालपुर हाल मुकाम पगारा रोड, जौरा आदि के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध किये गये हैं।

इस अवधि में पंजीबद्ध किये गये प्रकरणों में लगभग 78 हजार 560 रूपये की 180.90 बल्क लीटर देशी मदिरा, 7 हजार 410 रूपये की 7.56 बल्क लीटर विदेशी मदिरा तथा 3 हजार 430 रुपये की 10.50 बल्क लीटर बीयर जप्त की गई। इसी अवधि में जिले की कम्पोजिट मदिरा दुकानों के निरीक्षण के दौरान पायी गयी अनियमितताओं पर कुल 136 विभागीय प्रकरण लायसेंसियों के विरुद्ध दर्ज कर 1 लाख 19 हजार 240 रुपये का जुर्माना लगाया गया। माह जून 2025 में जिले की मदिरा दुकानों के लायसेंसियों से जुर्माने की राशि 1 लाख 51 हजार 593 तथा न्यूनतम प्रत्याभूत ड्यूटी की राशि 20 करोड़ 96 लाख 57 हजार 535 रुपये जमा कराई गई। कम्पोजिट मदिरा दुकानों पर मदिरा विक्रय दरों पर प्रभावी नियंत्रण रखे जाने हेतु सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्री सुरेन्द्र सिंह राठौड़ के नेतृत्व में गठित दल द्वारा लगातार मदिरा दुकानों पर निरीक्षण, टेस्ट परचेज किये जाने के साथ-साथ क्षेत्र में दबिश एवं उपलंभन कार्य किया जा रहा है।

कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला मुरैना (म0प्र0)

क्रमांक/क्यू/3/मा.रा./खनिज/2025/921 मुरैना,दिनांक- 07/07/2025

(म.प्र.गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18 (1-क) के अन्तर्गत उत्खनिपट्टा/पूर्वेक्षण अनुज्ञप्ति जो लागू हो प्राप्त करने के लिए)

द्वितीय सूचना

यह सूचित किया जाता है कि, आवेदक-श्री अभिषेक सिंह यादव पुत्र श्री मोहर सिंह यादव नि0-वार्ड नं0 11, फूलगंज बामौर खुर्द, तहसील बामौर जिला मुरैना द्वारा उत्खनिपट्टा प्राप्त करने हेतु निम्न क्षेत्र पर ऑनलाइन आवेदन पत्र दिनांक- 19.05.2025 को प्रस्तुत किया गया है। इस क्षेत्र पर आवेदन प्रस्तुत करने हेतु प्रथम सूचना क्रमांक-681 दिनांक-22.05.2025 प्रकाशित की गई थी। इस क्षेत्र पर पुनः दिनांक- 22/07/2025 तक इस क्षेत्र पर यथास्थिति उत्खनिपट्टा आवेदन ऑनलाइन आमंत्रित किये जाते है। आवेदन ई-खनिज पोर्टल http://ekhanij.mp.gov.in पर प्रस्तुत किये जायेंगे।

आवेदन का संक्षिप्त विवरण

जिला	तहसील	ग्राम	खसरा नम्बर	रकबा	भूमि का प्रकार निजी/शासकीय	खनिज का नाम	रिमार्क
मुरैना	मुरैना हाल तह0 बामौर	रंचोली	102	3.000 हे0	शास0 भूमि	फर्सीपत्थर खण्डा/ढोका उत्खनिपट्टा	

1- उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाइन आवेदन पत्र में आवेदित क्षेत्र के संबंध में अन्य इच्छुक आवेदकों से विज्ञप्ति प्रकाशित होने की तारिख से आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि तक (कार्यालयीन समय सांय 5:30 बजे तक) ऑनलाइन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है।

2- यदि प्रकाशित विज्ञप्ति के उपरांत आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि तक प्रथम सूचना से प्राप्त आवेदन को शामिल करते हुये 03 अथवा उससे अधिक अन्य आवेदकों के आवेदन पत्र प्राप्त होते है, तो प्रथम आवेदन पत्र एवं प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 21 के तहत् अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।

3- यदि इस प्रकाशित विज्ञप्ति में उल्लेखित आवेदन प्राप्त करनें की अंतिम तिथि तक 03 से कम आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं, तो उपरोक्त अवधि में प्राप्त आवेदन पत्र तथा पूर्व प्रकाशित विज्ञप्ति की अवधि के दौरान प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 21 के तहत् अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।

4- यदि प्रथम एवं द्वितीय प्रकाशित विज्ञप्ति के उपरांत भी निर्धारित समयावधि में अन्य कोई आवेदन पत्र प्राप्त नही होता है तो प्रथम आवेदक के पक्ष में नियमानुसार खनि रियायत स्वीकृत पर विचार किया जा सकेगा।

5- निर्धारित समयावधि के उपरांत प्राप्त आवेदन पत्रों को विचार में नही लिया जाएगा।

जिला खनि अधिकारी
(खनिज शाखा)
जिला मुरैना (म0प्र0)

G15271/25

पार्टी संगठन कार्यकर्ताओं की चिंता करेगा, कार्यकर्ता जनता की चिंता करें : हेमंत खण्डेलवाल

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने सोमवार को इंदौर में स्वागत समारोह एवं कार्यकर्ता सम्मेलन को किया संबोधित

इंदौर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने सोमवार को इंदौर में स्वागत समारोह एवं कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया। इससे पहले भाजपा प्रदेश अध्यक्ष खण्डेलवाल ने एकजोटिका होटल में इंदौर ग्रामीण जिले के कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित किया। तत्पश्चात हेमंत खण्डेलवाल ने खजराना गणेश मंदिर पहुंचकर पूजन अर्चन किया एवं दाता बंदीछोड़ गुरूद्वारा पहुंचकर मत्था टेककर प्रदेशवासियों के सुख समृद्धि की कामना की। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत कार्यकर्ता हैं। पार्टी कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से पार्टी आज बुलंदियां छू रही है। श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे, श्रद्धेय प्यारेलाल खण्डेलवाल जैसे अनेक महापुरूषों के त्याग और तपस्या से पाटी संगठन को मध्यप्रदेश में मजबूत किया। पार्टी के संस्थापक सदस्यों ने गांव-गांव घूमकर कार्यकर्ता तैयार किए और संगठन को मजबूत बनाया। कार्यकर्ता जब-जब मुझे याद करेंगे, वे मुझे अपने बीच ही पाएंगे। आप सभी कार्यकर्ता जनता की सेवा और चिंता करें, पार्टी संगठन आप सभी की चिंता करेगा। प्रदेश शासन के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल में स्वर्गीय कैलाश जोशी की छवि दिखाई देती है। खण्डेलवाल स्वर्गीय जोशी जी की तरह सहज, सरल व कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद करने वाले हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि पार्टी की सबसे बड़ी ताकत हमारे कार्यकर्ता हैं। कार्यकर्ताओं की मेहनत व परिश्रम से भाजपा आज विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना है। मध्यप्रदेश में भाजपा संगठन बहुत मजबूत स्थिति में है, इसका श्रेय भी आप सभी कार्यताओं को ही जाता है। हमें उन कार्यकर्ताओं और नेतृत्वों को भी हमेशा याद रखना है, जिन्होंने पार्टी संगठन को मजबूत कर हमें जनता की सेवा करने का अवसर दिलाया है। यह भारतीय जनता पार्टी ही है, जहां कार्यकर्ताओं को पूरा सम्मान मिलता है। इसका सबसे ताजा उदाहरण गांव-आदिवासी अंचल के बेटे व पार्टी के सामान्य कार्यकर्ता को प्रदेश अध्यक्ष जैसा दायित्व सौंपना है। भाजपा में सभी कार्यकर्ता समान हैं, पार्टी समय-समय पर दायित्व सौंपती रहती है। सभी कार्यकर्ता तालमेल और सामंजस्य के साथ पार्टी को और मजबूत कर नई बुलंदियों तक ले जाने का कार्य करें। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ऐसा भारत बना रहे हैं, जिसमें हर भारतीय को गर्व महसूस हो। इसके लिए सभी कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के विकास और जनकल्याणकारी कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना है। प्रधानमंत्री जी ऐसा भारत बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं, जो दुनिया का नेतृत्व करे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि भाजपा देश का एक मात्र ऐसा राजनीतिक दल है जिसमें कार्यकर्ता किसी भी पद पर पहुंच सकता है। हमें पार्टी संगठन को मजबूत बनाने वाले अपनी पार्टी के पूर्ववती श्रद्धेय कार्यकर्ताओं को भी याद करना होगा, जिन्होंने पार्टी संगठन को यहां तक पहुंचाने में अपनी महती भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि मैं भी पार्टी का सामान्य कार्यकता हूं। भाजपा संगठन का हर कार्यकर्ता खुद को पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष से कम न समझें। सभी कार्यकर्ताओं का मान-सम्मान हमेशा बरकरार रखा जाएगा। आप सभी कार्यकर्ता किसी दायित्व में रहें या न रहें, पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए कार्य करते रहे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में जनता के विकास के लिए लगातार कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवथा बन गया है और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।

नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बैठक में शामिल हुए मंत्री श्री कुशवाहा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाहा सोमवार को नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की 96वीं आमसभा बैठक में सम्मिलित हुए। भारत रत्न सी. सुब्रमण्यम ऑडिटोरियम एम.ए.एस.सी. कॉम्प्लेक्स के सभागार में आमसभा की अध्यक्षता केंद्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने की।

मंत्री श्री कुशवाहा ने कहा कि प्रदेश को उद्या निकी राज्य में विकसित करने के लिये सरकार दृढ़ संकल्पित है। मध्यप्रदेश का मसालों के उत्पादन में देश में प्रथम स्थान है। उन्होंने कहा कि इसको दृष्टिगत रखते हुये भारत कृषि अनुसंधान परिषद का प्रदेश में अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया जाये। इससे प्रदेश के कृषकों को मसाला फसलों की उन्नत प्रजातियां सुलभ एवं उचित दाम पर उपलब्ध हो सकेंगी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मसाला उत्पादन को प्रोत्साहन मिलेगा। कृषकों की आय में वृद्धि, उद्यानिकी उत्पाद के मूल्य संवर्धन से प्र-संस्करण उद्योग को बढ़ावा, प्रदेश एवं देश के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय के अध्ययन में सुविधायें प्राप्त होगी तथा प्रदेश के उद्यानिकी उत्पाद को निर्यात प्रोत्साहन मिलेगा। मंत्री श्री कुशवाहा ने कहा कि सब्जियों की संकर किस्मों के बीज बाजार में अधिक कीमतों में उपलब्ध हो पाते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान द्वारा उत्पादित संकर सब्जी बीजों को प्रदेश के कृषकों को सुलभ एवं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिये प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर बीज उत्पादन का कार्यक्रम अभियान के रूप में चलाया जाए। इससे कम लागत और कम समय में किसान बेहतर उत्पादन कर सकेंगे। आमसभा की बैठक में अनुसंधान परिषद के कार्यों का लेखा-जोखा तथा भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा की गई।

डॉ. केशव पांडे थिंक एंड सपोर्ट फाउंडेशन के निर्विरोध अध्यक्ष बने

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। थिंक एंड सपोर्ट फाउंडेशन समाजसेवी संस्था के चुनाव में डॉ. केशव पांडे निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। थिंक एंड सपोर्ट फाउंडेशन एक समाजसेवी संस्था है, जो पूरे मध्य प्रदेश भर में समाज सेवा का कार्य करती है, जिसमें धार्मिक आयोजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेल के विभिन्न कार्यक्रमों में सहयोग एवं गौ सेवा मानव सेवा गरीब बच्चों की शिक्षा एवं प्रतिदिन भोजन वितरण की सेवा सुचारू रूप से जारी रहती है। निरंतर 10 वर्षों से समाजसेवा के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्था अध्यक्ष के रूप में डॉ. केशव पांडे को अध्यक्ष सुनिश्चित किया। अब उनके मार्गदर्शन में संस्था और बढ़-चढ़कर कार्य करेगी। इस अवसर पर डॉ. केशव पांडे को अनिल शंकर नंद गिरी (जूना अखाड़ा तेरा मणि जगरावा परिवार) ने माला पहनाकर बधाई दी एवं संस्था के समस्त पदाधिकारी सुकन्या शर्मा, एसपी श्रीवास्तव, केदारनाथ गोयल, हर्ष बंसल, आकाश मिश्रा, आचार्य श्री रवि तिवारी, मनीष कुमार, बरखा नामदेव, गौरी शर्मा, राजेश कुशवाहा अन्य संस्था के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने मिलकर बधाई दी।

एंबुलेंस भी फंसी रही, तेज बारिश से भोपाल में करीब 3 किलोमीटर लंबा जाम लगा

40 मिनट तक एमपी नगर से रानी कमलापति स्टेशन तक रेंगते रहे वाहन

भोपाल। भोपाल में सोमवार को दोपहर से तेज बारिश जारी है। वहीं दूसरी ओर एमपी नगर जोन-1 से लेकर जीजी फ्लाईओवर और रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के सामने तक करीब 40 मिनट से ज्यादा समय तक ट्रैफिक जाम की स्थिति रही।

फ्लाईओवर पर जाम में एक एंबुलेंस भी फंसी रही। राहगीरों के साथ-साथ ऑफिस टाइम में लौट रहे वाहन चालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। एमपी नगर थाने से लेकर हबीबगंज नाके तक वाहन रेंगते नजर आए।

बताया जा रहा है कि जीजी फ्लाईओवर के अंत में, यानी हबीबगंज नाके के पास बारिश का पानी भर जाने से गाड़ियां धीमी हुई और ट्रैफिक जाम लग गया। बारिश की वजह से सड़क पर फिसलन और जलभराव ने हालात को और बिगाड़ दिया।

यातायात व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। मौके पर ट्रैफिक पुलिस और डायल-100 के जवान गाड़ियों को निकालने का प्रयास कर रहे थे। फिलहाल स्थिति सामान्य हो गई है।

दसवां शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ इनर व्हील क्लब मुरैना का

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। इनर व्हील क्लब मुरैना का दसवां शपथ ग्रहण समारोह हर्षोल्लास एवं गरिमापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रजनी अग्रवाल (पीडीसी) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती अलका भार्गव (डिस्ट्रिक्ट आईएसओ) उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में चार्टर प्रेसिडेंट श्रीमती करुणा जैन एवं क्लब की सभी पूर्व अध्यक्षगण, निवर्तमान अध्यक्ष एवं पदाधिकारी, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ सदस्यगण तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों और शहर के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों के स्वागत के साथ हुई। इसके पश्चात नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती श्वेता-अतुल महेश्वरी एवं सचिव श्रीमती साक्षी गोयल को क्लब की गौरवशाली परंपरा अनुसार कॉलर प्रदान कर पदभार सौंपा गया। इस अवसर पर क्लब में चार नई सदस्याओं डॉ. दीप्ति जैन, श्रीमती कंचन सिंह, श्रीमती नेहा गुप्ता एवं श्रीमती शिल्पी बंसल ने इनर व्हील क्लब की सदस्यता ग्रहण की। क्लब के विस्तार एवं महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह एक प्रेरणादायक कार्य रहा।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमती श्वेता-अतुल माहेश्वरी ने आगामी सत्र की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि- क्लब का प्राथमिक उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण होगा, जिसके अंतर्गत वृक्षारोपण एवं संरक्षण की विशेष पहल की जाएगी। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को शैक्षणिक सामग्री एवं सहयोग प्रदान किया जाएगा। महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य जागरूकता, विशेषकर मेनोपॉज़ के दौरान आने वाले मानसिक व शारीरिक परिवर्तनों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। वृद्धाश्रमों में निवास कर रहे बुजुर्गों के साथ समय बिताना, उन्हें पारिवारिक माहौल देना एवं आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराना क्लब का संकल्प रहेगा। स्वास्थ्य शिविर, स्वच्छता अभियान एवं जिला अस्पताल तथा क्लब से जुड़े चिकित्सकों के सहयोग से सामान्य जन के लिए स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। कार्यक्रम में चार्टर प्रेसिडेंट, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने भी अपने प्रेरणादायक विचार रखे एवं क्लब की आगामी योजनाओं की सराहना की। सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। अंत मे कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन क्लब की नवनियुक्त सचिव श्रीमती साक्षी गोयल द्वारा किया गया। समारोह का समापन राष्ट्रगीत के सामूहिक गायन के साथ किया गया।

किसानों को अधिक आय वाली फसलों के लिए प्रेरित करें: आयुक्त वर्णवाल

- ग्वालियर चंबल संभाग की रबी उत्पादन एवं खरीफकार्यक्रम की हुई समीक्षा

ग्वालियर । प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त अशोक वर्णवाल ने कहा है कि किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए परंपरागत कृषि को हाई वेल्यू क्रोप(अधिक आय वाली फसल) में शिफ्ट किया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को इस प्रकार की फसलें अपनाने के लिए प्रेरित करें। वर्णवाल शुक्रवार को ग्वालियर में आयोजित हुई संभागीय समीक्षा बैठक में रबी वर्ष 2024-25 में हुए उत्पादन एवं खरीफकार्यक्रम 2025 की तैयारी की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने दो चरणों में यह समीक्षा की। पहले चरण में कृषि, उद्यानिकी व सहकारिता और दोपहर बाद हुए दूसरे चरण में पशु पालन व डेयरी एवं मत्स्य उत्पादन की समीक्षा की। उन्होंने जोर देकर कहा कि पशु पालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन को आय का अतिरिक्त जरिया न समझे। इसे पूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में लें, जिससे किसानों की आय में बड़ा इजाफा हो।

बैठक में कृषि उत्पादन आयुक्त अशोक वर्णवाल ने सभी जिला कलेक्टरों से कहा कि वे अपने-अपने जिले में किसानों को परंपरागत खेती के स्थान पर ऐसी फसलें लेने के लिए प्रेरित करें जिसका बाजार में अधिक मूल्य मिल रहा है। इससे किसानों कि आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और किसानों को बेहतर बाजार भी उपलब्ध होगा। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों को आधुनिक तकनीक के साथ-साथ कृषि के क्षेत्र में उपयोग मे लाए जा रही मशीनरी के लाभों से भी अवगत कराया जाए।कृषि उत्पादन आयुक्त वर्णवाल ने कहा कि वर्तमान समय सूचना का समय है। सोशल मीडिया के माध्यम से भी किसानों के हित में केन्द्र सरकार एवं प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी किसानों तक पहुँचाई जाए। आधुनिक तरीके से कृषि कर रहे सफल किसानों की जानकारी अन्य किसानों को मिले इसके लिए भी सोशल मीडिया का भी अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। अपर मुख्य सचिव हॉर्टिकल्चर अनुपम राजन ने कहा कि उद्यानिकी के क्षेत्र में किसानों को प्रेरित किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र के विकास की अपार संभावनाएं है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि उद्यानिकी का क्षेत्र बढ़े। किसान उद्यानिकी के क्षेत्र में भी ऐसी फसलों को चुने जिसके बाजार में अच्छे दाम मिल रहे हों। संचालक कृषि अजय गुप्ता ने बैठक में उर्वरक के उपयोग एवं उसकी उपलब्धता के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में डीएपी के वैकल्पिक उर्वरकों के बारे में किसानों को विस्तार से बताया जाए। सोशल मीडिया के माध्यम से भी किसानों को यह जानकारी दी जाए। उन्होंने कहा कि डबल लॉक सेंटर पर जहाँ किसान खाद- बीज लेने आते हैं वहाँ पर एक बेहतर सेंटर स्थापित किया जाए। केन्द्र पर किसानों के बैठने, छाया, प्रकाश एवं पेयजल की व्यवस्था हो ताकि किसानों को किसी प्रकार की परेशानी न हो।

आयुक्त सहकारिता मनोज पुष्प ने भी सहकारिता के क्षेत्र में प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने जिला कलेक्टरों से अपेक्षा की वे सहकारिता के क्षेत्र में भी निरंतर मोनिटरिंग कर विभागीय कार्यों का बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित कराएं। संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने प्रारंभ में ग्वालियर चंबल संभाग के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। बैठक में अपर मुख्य सचिव पशुपालन उमाकांत उमराव, सचिव पशुपालन एवं डेयरी सत्येन्द्र सिंह ,संचालक कृषि अजय गुप्ता, आयुक्त सहकारिता मनोज पुष्प उपस्थित थे।

भोपाल सहित पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र में अब तक 3 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर स्थापित

भोपाल। केन्द्र सरकार की रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस) योजना के अंतर्गत मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र में स्मार्ट मीटर लगाने का काम त्वरित गति से चल रहा है। जहां स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं, वहां पर समय पर बिलिंग तथा रीडिंग हो रही है तथा दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट भी मिलनी शुरू हो गई है। कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के 16 जिलों में अब तक 3 लाख, 3 हजार 305 स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं। इनमें सर्वाधिक भोपाल शहर वृत्त में एक लाख, 62 हजार 320 स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं कंपनी ने कहा है कि स्मार्ट मीटर लगने से उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएं, सटीक बिलिंग और ऊर्जा दक्षता में सुधार हो रहा है। स्मार्ट मीटर लगाने का काम समय सीमा में पूर्ण करने के लिए कंपनी की टीमें लगातार कार्य में जुटी हुई हैं। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने स्मार्ट मीटर के फायदे बताते हुए कहा है कि स्मार्ट मीटर से रियल टाइम डेटा प्राप्त किया जा सकता है, जिससे उपभोक्ताओं को सटीक और समय पर बिलिंग सुनिश्चित की जा रही है। कंपनी ने बताया कि जहां-जहां भी स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं वहां पर बिलिंग तथा रीडिंग निर्धारित समय पर हो रही है, इससे सभी उपभोक्ता संतुष्ट हैं। नए टैरिफ आर्डर के अनुसार स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को अब खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट भी दी जा रही है। जून माह का बिल जो कि जुलाई माह में जारी हुआ है, उसमें दिन के टैरिफ में सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक उपयोग की गई विद्युत के दौरान बनी यूनिट पर छूट अलग कॉलम में अंकित की गई है।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए मै. गुरुकृपा प्रकाशन प्रेस ,टी.आई.टी कॉम्पलेक्स मुरैना से मुद्रित एवं हिन्दुस्तान एक्सप्रेस परिसर नवीन नगर निगम मुख्यालय के सामने सिटी सेंटर ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। R.N.I. No. MP HIN/2007/ 18763
सम्पादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, स्थानीय संपादक संजय त्रिपाठी सभी विवादों का न्याय क्षेत्र ग्वालियर न्यायालय होगा। फोन: 0751-2234001 मो. 94251-26060, 9425360435